मानवतावाद के संघर्ष में -

एक यात्रा :

: *समाजवाद*

प्रस्तावना

१) सोविएत संघ का अवसान लेकिन लेनिन स्मृतिशेष.

२) भारतीय संविधान और समाजवाद.

२) पच्चीस वर्षे पूर्वःसोविएत समाजवादी व्यवस्था का ध्वस्त होना.

३) औद्दोगिक क्रांतिं.

४) समाजवादः धाराएं.

६) समाजवाद का उभरना.

* समानता का प्रश्न.

* निजी संपत्ती का प्रश्न.

* समाजवाद का अर्थ.

* लोकतंत्र और समाजवाद.

* समाजवाद के आधार.

७) समाजवाद के अंतर्गत तीन धाराएं.

८) क्रांतिं.

९) रूसी क्रांतिं.

१०) अक्तुबर क्रांतिं.

११) सोविएत रूस.

* क्रांतिं से क्या मिला.

*सोशॅलिस्ट समाज में वितरण का सिद्धांत.

* श्रमप्रतिष्ठा.

* नागरी और ग्रामीण द्वंद्व.

* योजनाएं.

* दुनिया के लिए योगदान.

* समाजवाद का रूसी प्रयोग असफल?

* व्लादिमिर इलिच्च लेनिन.

* जौसॅफ स्टॅलिन.

* मिखाईल गोर्बाचेव्ह..

१३) चीनी क्रांति.

* समाजवादी बाजार अर्थव्यवस्था (चीनी)

१४) लोकतांत्रिक समाजवाद.

* लासाले,काऊत्स्की,

* संशोधनवाद:बेरेंनस्टाईन.

* एंटोनियो ग्राम्शी : इटली

* इग्लंड का फेबियन समाजवाद.

* द्वितीय विश्व युद्ध के बाद .

* कल्याणकारी पूंजीवाद.

* यूरो कम्युनिझ्म.

१४) अराजकवाद.

* गेराल्ड विन्स्टेनले.

* विलियम गॉडविन

* माइकेल बाकुनिन.

* प्रिन्स क्रोपाटकिन.

* पियरे प्रुधो.

* अन्य क्रांतिकारी.

१५) साम्यवादी चिंतक.

* कार्ल मार्क्स.

* फेडरिक एंगेल्स.

* मार्क्स और मार्क्सवाद पर आक्षेप.

* कम्युनिस्ट.

आंतरराष्ट्रीय सर्वहारा संगठन.

(प्रथम,द्वितीय,तृतीय)

* लियॅान ट्राटस्की.

* निकोलाई बुखारीन.

* जॉर्जी प्लेखानोव्ह.

* रोझा लक्झेमबुर्ग.

१७) धार्मिक समाजवाद.

१८) यूरोप में विचारमंथन और क्रांतियां.

* चार्टिस्ट आंदोलन.

* धर्म सुधार.

* फ्रान्सिसी क्रांतियां.

* यूटोपीयन समाजवाद.

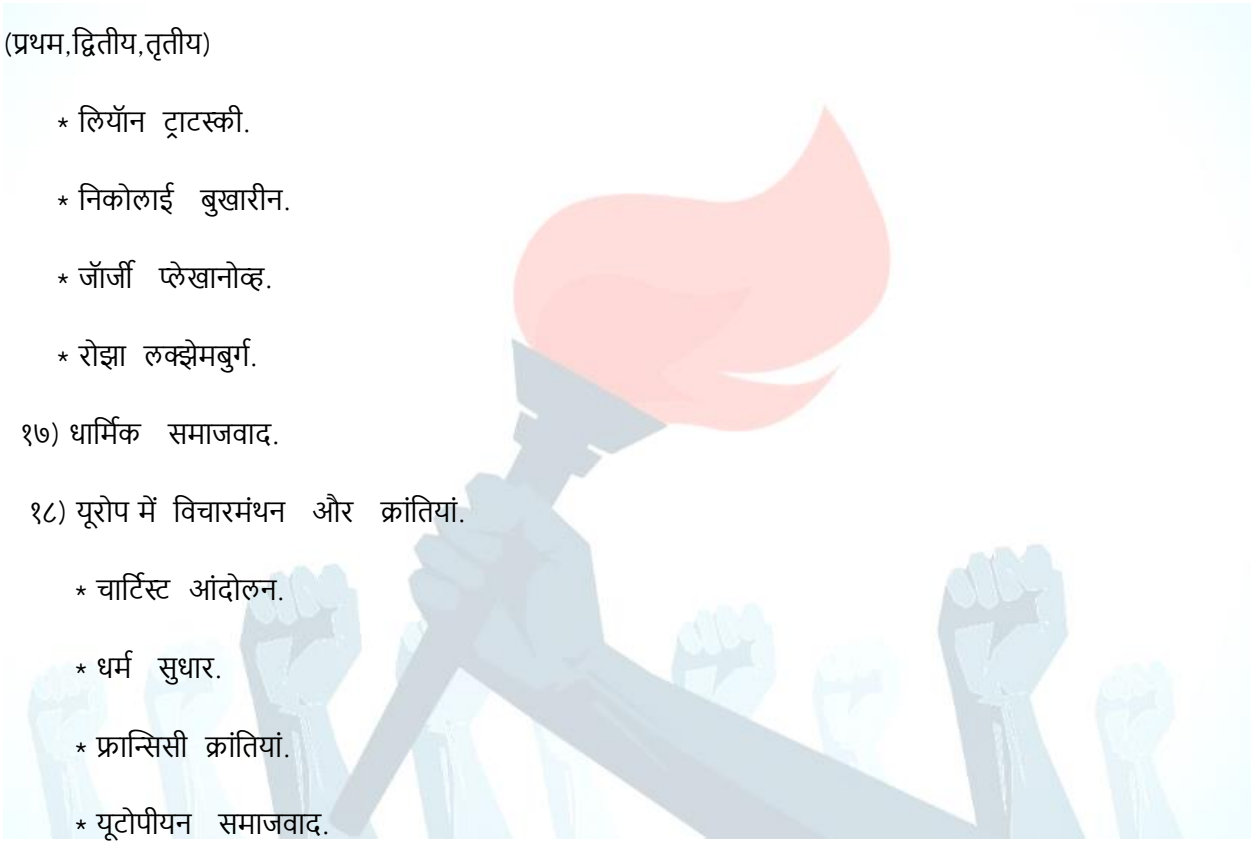

1. ## सोविएत संघ का अवसान लेकिन लेनिन स्मृति शेष

इस वर्ष सोवियत संघ के विघटन और कम्युनिस्ट शासन के अवसान को अगस्त में 25 वषॅ हो रहे हैं। उसी तरह इसी वर्ष अक्टूबर क्रान्ति के सौवें वषॅ की शुरुआत हो रही है। अगस्त 1991 में सोवियत शासन की स्मृतियों के विरोध में उबाल देखने को मिला था।

सोवियत संघ के अवसान के साथ ही दुनिया के प्रचार माध्यमों ने घोषित कर दिया था कि समाजवाद अब इतिहास की बात हो गयी है।

लेकिन इसी बात को आधार बनाकर" गल्फ न्यूज" में माशा गैसिन ने लिखे अनुसार -(जून2016)-

प्रत्यक्ष में रूस में लेनिन को उखाड डालने की घटना दिखना बहुत दुर्लभ है। सोवियत संघ के विघटन को पाव सदी हो चुकी है। लेनिन की छोटी-बडी गर्दन तानी हुई मूर्तियाँ हजारों की संख्या में रूस के चौराहों पर दिखने को मिलती हैं। प्रत्यक्ष लेनिन का रसायन से संरक्षित किया हुआ शव कांच के बक्से में मास्को के लाल चौक में विद्यमान है। कालूझकाया चौक में लेनिन की 70 फीट की मूर्ति यह शहर के सबसे बडे स्मारकों में से एक है। आम तौर पर, कम्युनिस्ट दौर के मास्को में खडे स्मारक नष्ट नहीं किए गए हैं। अगस्त 19 91 में उखाडे गए कुछ स्मारक तो दोबारा खडे किए गए हैं। ऐसा क्यों? उसी तरह यूरोप-लॅटिन अमेरिका में लोकतांत्रिक समाजवादी, लोकतांत्रिक माध्यम से सत्ता में आते रहते हैं। बीसवीं सदी के बाद दुनिया लगभग दो खेमों में विभक्त है, वामपंथ और दक्षिण पंथ। समाजवाद में ऐसा क्या है कि इस की ओर लौटने की प्रवृत्ति बारबार दिखाई देती है। इन प्रसंग को आधार बनाकर हम क्यों न इसके उद्भव के इतिहास एवं उसकी उपलब्धियों का स्मरण करें-।

2. ## भारतीय संविधान और समाजवाद

* 1948 में स्वीकृत संविधान में, संविधान सभा के सदस्यों के आग्रह के बावजूद, समाजवाद का अंतर्भाव नहीं किया गया था।

* फिर तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गाँधी जी की पहल पर दिसम्बर1976 में 42 वे संविधान संशोधन द्वारा 'समाजवाद' का इसमें अंतर्भाव कर दिया गया। अब भारत समाजवादी गणराज्य बन गया था। लेकिन उस समय समाजवाद की या उसके निश्चित अर्थ के प्रति कोई विशेष चर्चा नहीं हुई थी।

* अत: भारतीय न्यायपालिका के सम्मुख याचिकाएं दाखिल की गयीं कि "समाजवादी गणराज्य" का वास्तविक अर्थ क्या है? एक मुंबई हाईकोर्ट में दो नागरिकों द्वारा और दूसरी, स्वतंत्र पाटी द्वारा 1994
में। उनपर चर्चा होकर अधिकृत निर्णय नहीं आया।

लेकिन 2015 के गणतंत्र दिवस से संबंधित एक विज्ञापन में सरकार द्वारा उस असंशोधित उद्देशिका की छायाप्रति प्रसिद्ध की गई थी, जिसमें समाजवाद' का उल्लेख नहीं था। उसी दरम्यान एक केंद्रीय मंत्री जी ने संविधान की प्रस्तावना पर पुन: बहस की आवश्यकता बतायी थी, जिसे शिवसेना ने समर्थन दिया था। फिर यह मुद्दा संसद में श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जी ने उठाया था।

* लेकिन उच्चतम न्यायालय कई प्रसंगों में कह चुका है की ये संकल्पनाएं भारतीय संविधान के अभिन्न अंग हैं।

*अंतत: 24फरवरी 2015 को सरकार को स्पष्ट करना पडा की 'भारत के संविधान की प्रस्तावना से 'धर्मनिरपेक्ष' और' समाजवाद' शब्द हटाए नहीं जाएंगे।

3. ## पचीस वषॅ पूर्व

सोवियत समाजवादी व्यवस्था का ध्वस्त होना।

उसके विरोधियों के अनुसार-

1) यह नियोजित विकास की धारणा की पराजय है।

लेकिन क्या "नियोजित विकास" की धारणा का निरपेक्ष त्याग दुनिया के पूंजीवादी देशों ने भी कर डाला है? क्या यह संभव भी है? नियोजन के बिना प्रकृति के संसाधनों की बर्बादी को रोका जा सकेगा? भारत में 2014 में नई सरकार आने के बाद उसने आधी शताब्दी से चले आ रहे नियोजन आयोग को रद्द कर दिया। लेकिन इससे अंतर क्या आया है? इसपर काफी कुछ चर्चा हो चुकी है।

2) यह मुक्त उत्पादन और बाजार प्रणाली के प्रति झुकाव दिखाई दे रहा है अर्थात पूंजीवाद के प्रति लोगों में प्रेम उमड आया है।

लेकिन इस प्रणाली का महत्वपूर्ण विचार यह है कि दुनिया की सभी समस्याओं का समाधान उत्पादन को निरंतर बढाने में है। उपभोक्तावादी संस्कृति को अमर्याद रूप से बढाने में है। लेकिन आज पर्यावरण से संबंधित समस्याओं के सामने यह तर्क कहां तक उचित है।

दूसरी बात, वास्तव में पूंजीवादी व्यवस्था में बाजार सत्ता अंततः राज्यसत्ता को अपने अनुकूल कर ही लेती है। शुद्ध मुक्त बाजार दुनिया में कहीं भी अस्तित्व में नहीं है। किसी न किसी रूप में सरकार का हस्तक्षेप अवश्य रहता है।

लेकिन आज भी चिंतक यह स्वीकार करते हैं कि अगर चिंतन की दुनिया से'समाजवाद' का वजूद मिट गया तो यह समाजवाद के लिए ही बुरा नहीं होगा, तो पूरी दुनिया के लिए भी बुरा होगा क्योंकि उसके बाद आगे बढने के लिए दुनिया के पास विकल्पों में से चुनाव करने के लिए आधार ही नहीं रहेगा। आज दुनिया में जो कल्याणकारी राज्य से लेकर तो मानवाधिकारों तक की संकल्पनाएँ अस्तित्व में आई हैं वे या तो 'समाजवाद ' ने दी है या फिर समाजवाद को बुरा-भला कहते हुए क्यों न हो, विरोधियों द्वारा मजबूरी में स्वीकार की गई हैं।

तो आइए एक बार फिर इसकी पडताल करें कि यह क्या बला है?

४. समाजवाद: औद्योगिक क्रांति

ई.स.1750 से 1850 के बीच इंग्लैंड में जो यांत्रिक अनुसंधान हुए और उन्हें उत्पादन तथा व्यापार के लिए उपयोग में लाया गया, उन गतिविधियों को औद्योगिक क्रांति (industrial revolution)कहां जाता है। इनमें प्रमुख अन्वेषण इस प्रकार थे-

1) 'जान के' इस व्यक्ति ने ई.1733 में 'चल भरनी' का पेटेंट लिया।

2) ' लेविस पाल' और 'जान वॉट' इन्होंने 1738 ई.में कपास से धागा बनाने का प्रथम यंत्र बनाया।

3) 'जेम्स हार्गिव्हज' ने1766में कपास से सूत बनाने का कारखाना बनाया। इसकी कुछ त्रुटियों को रिचर्ड आर्कराईट ने 1767 में दूर किया।

सैम्युअल क्राम्पटन ने स्पिनिंग म्यूल का गठन किया।

4) 1785 में एडमंड कार्टराईट ने यांत्रिक करघे को बनाया।

5) 1 700ई.से लेकर तो 1770 के दरम्यान इंग्लैंड में कोयले का उत्पादन 34 गुना बढा। (जबकी इसे निकालने का प्रथम प्रयास१७७४ ई.में सीतारामपुर में हुआ था। उत्पादन १७७५ ई.में शुरू हुआ।)

6) 1805 में 'न्यू कोमेन' ने खदानों में से पानी निकालने के लिए भांप पर चलने वाला पंप तैयार किया। (यह भांप की ऊर्जा का प्रथम प्रयोग था।)

7) भांप केआधार पर नौकानयन 1807में शुरू हुआ। (राबर्ट फूलटन)

8) जार्ज स्टिफंन्सन: रेलगाडी के इंजन का पहली बार प्रयोग. (18 14में)

9) 1825 में प्रवासियों की ढुलाई करने वाली रेलगाडी इंग्लैंड में शुरू।

10) भांप द्वारा पानी पर चलने वाला जहाज सर्वप्रथम अमेरिका से यूरोप 1819 में पहुंचा।

@उपरोक्त औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप बने यंत्रों का उपयोग शुरू होने से उत्पादन और आवागमन के क्षेत्रों में भारी क्रांति हुई। इसके परिणाम स्वरूप जिस प्रणाली का सूत्रपात हुआ उसे 'पूंजीवाद ' कहा जाता है।

*दूसरे के श्रम के आधार पर केवल मुनाफा कमाने के लिए, किए जा रहे उत्पादन पध्दति को 'पूंजीवादी पध्दति' कहते हैं।

*पूंजीवाद के साथ ही प्रजातंत्र का भी अवतरण जरूर हुआ लेकिन इसमें संपत्ति प्राप्ति का अधिकार अबाधित रहा; बिना किसी मर्यादा के। उस कारण समाज में भारी विसंगतियां पैदा हुईं, जैसी -अमीरी-गरीबी में भारी खाई तथा बाजार में तेजी-मंदी का चक्र। इन विसंगतियों को दूर करने की दवा के रूप में 'समाजवाद' का विचार सामने आया, ऐसा कहा जाता है। लेकिन आज तो कहा जाने लगा है कि 'समाजवाद' काल बाह्य हो चुका है। लेकिन उसका स्थान जिस 'मुक्त बाजारवाद' ने लिया है उससे भी दुनिया की समस्याएँ दूर होने के स्थान पर बढी ही हैं!

. ५

समाजवाद...

*पियरे लेख (1797-1871),सेन सायमन के अनुयायी थे। उन्होंने सेन सायमनवाद के लिए 'सोशॅलिज्म ' शब्द को ईजाद किया।

*सोशॅलिज्म (समाजवाद) शब्द लैटिन के 'शोशस'(socies)शब्द से निकला है जिसका अर्थ है 'साथी'?

*कोल का महाग्रंथ'histry of social thoughts'में बताया गया है कि'समाजवाद 'शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम1827में 'ओवेनाईट को- ऑपरेटिव मॅगझिन' में हुआ था।

इसे 'व्यक्तिगत'के विरुद्ध 'सामाजिक' अर्थ में प्रयुक्त किया गया था।

*1840 के बाद इसका प्रयोग उत्पादन के साधनों के सामूहिक स्वामित्व के अर्थ में किया गया।

तबसे यह शब्द सारी दुनिया में प्रचलित हो गया।

*1892 में पेरिस के लेफिगारो(lefigaro)ने 'समाजवाद' की 600 परिभाषाएं (या उन्हें लक्षण कहना अधिक उचित होगा) प्रकाशित कीं।

*एंजेलो रापापोर्ट ने अपनी 'डिक्शनरी ऑफ सोशॅलिज्म'(1924) में समाजवाद की 39 परिभाषाएं दी हैं।

*1924 में ही श्री डान ग्रिफिश ने एक पुस्तक संपादित की थी--'समाजवाद क्या है?'इसमें उन्होंने इसकी 263 परिभाषाएं दी है।

19 वीं शताब्दी में समाजवाद को नवीन रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय मार्क्स को जाता है। उन्होंने अर्थशास्त्र और सामाजिक विकास की तर्काधिष्ठित व्याख्या करते हुए एक नये सिध्दांत का प्रतिपादन किया।1848 में मार्क्स ने साम्यवादी घोषणापत्र प्रस्तुत करते हुए 'समाजवाद' का पूरा दर्शन दुनिया के सामने रखा।

*जहां तक समाजवाद की शुध्द परिभाषा का संबंध है, वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तकों के अनुसार-

"समाजवाद का अर्थ है उत्पादन और वितरण के साधनों पर सामूहिक अधिकार।"-अधिकांश समाजवादी इस परिभाषा को मानते हैं।

शुरुआती समाजवादियों द्वारा प्रतिपादित कुछ समान विचार-

*केंद्रीकृत योजनाबध्द अर्थतंत्र। संसाधनों की बर्बादी रोकने, इसे आवश्यक बताया गया है।

* समाज घटकों की आय में समानता।

*उत्पादन का उद्देश्य:सामान्य हित तथा समान उपभोग, न कि मुनाफा।

*सम्पति का सामूहिक स्वामित्व।

*सम्पत्ति से तथा सत्ता से वंचितों पर हो रहे अन्याय के प्रति नैतिक रोष।

<u>पूंजीवाद के प्रति गंभीर आक्षेप</u>: पूंजीवाद एक अक्षम और बर्बादीपूर्ण व्यवस्था है। इससे समाज में बेकारी तथा गरीबी पैदा होती है। यह मनुष्य को स्वार्थी तथा निर्मम प्रतियोगी बनाता है, जिस कारण मनुष्य मानवीय कोमल भावनाओं को खो बैठता है। इस आक्षेप के लिए व्यावहारिक आधार भी था।

*उत्पादन वृद्धि के लिए आधुनिकतम मशीनों और प्रबंधन का विकास, औद्योगीकरण की अनिवार्य प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में बाजारशक्ति के सम्मुख मनुष्य इतना तुच्छ और नगण्य हो जाता है कि उसकी स्वतंत्रता का कोई वास्तविक अर्थ नहीं रहता। यह स्वतंत्रता आभासी हो जाती है।

*इस सभ्यता ने प्रत्यक्ष चिंतन और बौध्दिक गतिविधियों को भी शक्ति और अर्थ की सेवा में समर्पित कर दिया है।

सामाजिक जीवन एकदम निर्मम हो गया है। यहां यह ध्यान में रखना होगा कि कई सभ्यताएं सामाजिक असमानता के भार से टूट गई हैं।

*आज यह कहा जाता है कि आर्थिक उदारवाद के माध्यम से भी विकास का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन इसके चलते आज इसके समर्थक भी मान्य करते हैं कि अमीरी-गरीबी के बीच की खाई काफी बढ गयी है।

*पूंजीवादी देशों की सम्पन्नता तीसरी दुनियां के देशों के शोषण पर आधारित है। इन्हीं तथाकथित तत्कालीन लोकतंत्रों ने ही तो उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और भयावह महायुद्धों को जन्म दिया था। ये ही स्थानीय मानव समाजों के अमानवीय विस्थापन के लिए कारण बने। अकेले आठवें दशक में ही, विकासशील देशों में कारोबार कर रहे अमेरिकी निगमों ने अपने देश को जो मुनाफा भेजा वह उनके निवेश राशि के चार गुना था।

*भले ही मानवतावाद के विचार काफी पहिले से व्यक्त किए जाते रहे हैं, उन्हें कुछ चिंतकों ने समाजवादी धारा के पूर्वाधार के रूप में चिन्हित किया है, लेकिन काफी विद्वान समाजवाद को-

*मूल रूप से फ्रांसीसी और औद्योगिक क्रांतियों के प्रति एक प्रतिक्रिया रूप मानते हैं। अतः इस चिंतन को इससे पहले ले जाने के लिए वे सहमत नहीं हैं। वे निश्चित रूप से इसे एक आधुनिक चिंतन मानते हैं।

*औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप उदार लोकतांत्रिक पूंजीवाद के दरम्यान इस भारी उत्साह औरआशा का संचार हुआ कि तन्त्र और विज्ञान के आधार पर एक समान और तर्कसंगत समाज का निर्माण किया जा सकता है। लेकिन इसी दौरान यह आशा कुंठित होने लगी। धन का संकेंद्रण और अनियंत्रित प्रतियोगिता से गरीबी कम होने की जगह अपने चरम पर पहुंचने लगी। तो इस स्थिति की समीक्षा के फलस्वरूप विकल्प प्रस्तुत करने की दृष्टि से यह एक सुसंगत सिध्दांत के रूप में अस्तित्व में आया।

*समाजवाद, मार्क्सवाद--कम्युनिज्म को एक ही मानना सही नहीं होगा। समाजवाद मुख्य जाति तो मार्क्सवाद, अराजकतावाद आदि उपजातियां होगीं।

*इतिहासकारों ने समाजवाद को इस तरह व्यक्त किया है'-

फ्रांसिसी क्रांति ने आधुनिक युग की शुरुआत की, जिसने समाजवाद को जन्म दिया। इस युग ने प्रभुत्ववाद तथा प्रभुत्व-विरोध के बीच के विभाजन को जन्म दिया, जो राजकीय समाजवाद तथा अराजकतावाद में प्रकट हुआ। अपने पूर्व विद्वानों के समान क्रोपाटकिन ने राज्यवाद का जन्म फ्रांसीसी क्रांति से जोडा।

*राजकीय समाजवाद की शुरुआत 1794-95के बैबुफवादी षडयंत्रों से जनित जैकोबिनवादी कम्युनिज्म में हुई। साथ ही इसकी जडें अन्य कई विचारकों के विचारों में भी हैं। वे सब, व्यक्ति को राज्य का मात्र एक कर्मचारी बना दे रहे थे। इसके विपरीत अराजकतावाद जननियंत्रण और वास्तविक आर्थिक समानता की मांग कर रहा था। वह गाडविन की राज्यवाद- विरोधी सामाजिक क्रांति, फूरिए के मुक्त संगठनों पर आधारित समाजवादी समुदायों, ओवेन के सहकारी समाजवाद और प्रुधो के परस्परवाद से प्रेरणा पा रहा था।

*बैबूफवादी आंदोलन उदारवादी जनतंत्र और कम्युनिज्म के बीच अलगाव का बिंदु है। क्योंकि इसके अनुसार समानता आजादी की पूर्तता नहीं है बल्कि इसकी सीमा है।(कोलाकोव्स्कि)

1830 के दशक से समाजवाद को बैबुफ ने ही वर्ग संघर्ष की दृष्टि से देखा।

*कम्युनिस्टों ने निजी संपत्ति की समाप्ति, उत्पीडितों तथा शोषितों द्वारा बल के प्रयोग के माध्यम से वितरण के बराबरी की मांग की।

७ **समाजवाद:धाराएं-**

समाजवाद को मानने वाले लोग–

1) पूंजीपति और उनके मुनाफे को धक्का न लगाते हुए उपाय सुझाने वाले|

2) मनोराज्यात्मक:

ब्रिटेन में ओवेन के अनुयायी|

फ्रांस में फूरिए के अनुयायी प्रमुख|

(इनमें श्रमिक आंदोलन से न जुडे लोगों की संख्या अधिक थी।)

3) कम्युनिस्ट: केवल कानूनी राजकीय सुधार पर्याप्त नहीं है। पूरी सामाजिक व्यवस्था में ही सुधार होना चाहिए, ऐसा श्रमिकों के एक बडे वर्ग का विचार था। यह श्रमिक वर्ग का आंदोलन था। ये अपने आपको कम्युनिस्ट कहलाते थे। मार्क्स इनमें शामिल थे।

ब्रिटेन का चार्टिस्ट आंदोलन कामगार वर्गीय आंदोलन ही था लेकिन इस आंदोलन को ओवेन का विरोध था।

कम्युनिस्ट हमेशा क्रांति की अगुआई करने के लिए केवल श्रमिक वर्ग को ही सक्षम मानते थे।

८ **समाजवाद का उभरना**

*यूरोप में हुई औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप वहां का सामाजिक ढांचा बदल गया। एक तरफ मुठ्ठीभर अमीर उभर आए तो दूसरी तरफ दो समय की रोटी के लिए भीषण संघर्ष करने वाला श्रमिक वर्ग।

*औद्योगिक क्रांति के कारण उत्पादन वृद्धि होगी और वस्तुओं की कमी न रहने के कारण दुनिया में दुख-दर्द कम होगा यह आशा व्यर्थ दिखाई देने लगी। एकत्र आए श्रमिकों में चेतना जागृत होने लगी ।

*पूंजीवादी संस्कृति में अंतर्भूत स्वतंत्रता की संकल्पना खोखली होने की वास्तवता सामने आने लगी।

-ऐसी स्थिति में पश्चिमी देशों में-

*स्वतंत्रता, समता और बंधुता के विचार तीन-चार सौ सालों से विकसित हो रहे थे।

*इस प्रक्रिया के दौरान ही जनता का अनियंत्रित राज्यसत्ता के साथ टकराव भी हुआ। आततायी शासक को फांसी पर लटकाया गया।

*साथ ही धर्म की अतार्किक सत्ता को चुनौती दी गई।

*इस विचार प्रक्रिया को जिन चिंतकों ने शुरू किया उन्हें यूटोपियन समाजवादी कहा गया। उनका जोर, मनुष्य के विवेक बुध्दि का आवाहन करने पर था।

*यह प्रक्रिया आगे फ्रांसीसी क्रांति में परिणत हो गयी।

*इग्लैंड में ओवेन तो फ्रांस में साइमन और फूरिए ने इस विचारधारा का प्रतिनिधित्व किया। बस्तियां बसाकर कल्पनाको वास्तवता में बदलने का प्रयास हुआ।

इससे अलग पूर्व के देशों में (भारत, चीन, रूस आदि में)उस समय, राज्य सत्ता को ईश्वरीय सत्ता, राजा को ईश्वरीय प्रतिनिधि माना जाता था। भारत में तो अच्छूत समझे जानेवाले व्यक्तियों को इन्सान ही नहीं समझा जाता था। हालांकि युध्द होते थे, लेकिन वे जमीन की भूख मिटाने के लिए। यहां मानवीय भावनाओं, को आगे बढाने के लिए कोई व्यापक संघर्ष नहीं हुए। इस दृष्टि से यह बात सही है कि वहां के संघर्षों में से जो समाजवाद की कल्पना का उदय हुआ है वह पाश्चात्य ही है।

९ समानता का प्रश्न

*पूंजीवादी समाज असमानता को प्राकृतिक मानता है।

*एक व्यक्ति के हाथ में अमर्याद संपत्ति है और दूसरा जीवन का हर क्षण जिंदा रहने के जद्दोजहद में ही बिताता है, तब तक अवसरों की समानता आभासी है। दोनों में कभी स्पर्धा हो ही नहीं सकती। आजादी, समता, बंधुता इन तत्वों को वास्तव में अमल में लाने के लिए आर्थिक असमानता का प्रश्न हल करना होगा। इसी चिंतन में से ' समाजवाद ' का जन्म हुआ है।

१० निजी संपत्ति का प्रश्न

*निजी संपत्ति प्राप्त करने का अधिकार और आजादी–

सोवियत संघ तथा अन्य कुछ देशों में कम्युनिस्ट शासन का बीच का समय छोड दिया जाए तो निजी संपत्ति प्राप्त करने के अधिकार को सारे विश्व में मान्यता प्राप्त है। इतना ही नहीं, इसे पवित्र अधिकार भी कहा गया है। यह चलते आ रहे समाजधारा की व्यवस्था है ।

*संपत्ति के विषय में कुछ प्रश्न उपस्थित किए जाते हैं-

क्या स्वामित्व की भावना स्वाभाविक नहीं है?

अपनी आवश्यकता अनुसार वस्तुओं का संग्रह करना स्वाभाविक है। लेकिन यहां इस स्वामित्व की भावना का दूसरे को गुलाम बनाने की स्वामित्व की भावना के साथ घालमेल नहीं करना चाहिए।

अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों के श्रम के शोषण के माध्यम से पैदा हुई और शोषण के उद्देश्य की पूर्ति करनेवाली जो संपत्ति होती है उसे' निजी संपत्ति' कहा गया है। यह समाजवादी चिंतन से उभरी परिभाषा हैं। कम्युनिस्ट रूस में ऐसी' निजी संपत्ति का अस्तित्व नहीं था।

*एक और आक्षेप यह है कि निजी संपत्ति के उन्मूलन से नागरिकों में प्रतियोगिता की भावना समाप्त हो जाएगी। अधिक श्रम करने के प्रति उत्साह नहीं रहेगा। प्रतियोगिता और श्रम के प्रति उत्साह ही तो प्रगति के पीछे की प्रेरक शक्ति है। फिर दुनिया अधिक समृद्ध कैसी होती रहेगी?

लेकिन हम समृद्धि किसे कहेंगे? नये असीम उपभोग चक्र के फेरे में ही तों अनगिनत समस्याएं आ खडी हुई हैं। क्या यह उपभोग का चक्र ही अन्तिम सत्य है? प्रकृति के संसाधन अनंत नहीं है। फिर अगली पीढियों का क्या?

सामान्य होटल में पांच या दस रुपये के काफी का कप पांच सितारा होटल में जाकर पांच सौ रुपये में पीना क्या यही समृद्धि का पैमाना है। अगर होगा तो संपूर्ण मानव जाति की दृष्टि से यह कितना भोंडा है। इने गिने दबंग इसे संपूर्ण मानव जाति पर थोप रहे हैं। मानव जाति का दोष इतना जरूर है कि वह इसे चुपचाप सहे जा रही है। प्रकृति के संसाधनों पर प्रत्येक व्यक्ति का समान अधिकार है। जन्म के साथ कोई व्यक्ति विशेषाधिकार लेकर नहीं आता। फिर आप निजी संग्रहण किस मर्यादा तक करोगे?

*अब प्रश्न है उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व का ।

उत्पादन के साधनों पर जबतक व्यक्तिगत स्वामित्व रहेगा तब तक उसका उद्देश्य मुनाफा ही रहेगा न कि प्रत्येक सदस्य के आवश्यकताओं की पूर्णत: तथा नियमित पूर्ति।

.११ **<u>समाजवाद का अर्थ</u>**

*"एक परिभाषा के अनुसार समाजवाद का अर्थ, व्यक्तिगत संपत्ति को मिटा देना है।"

लेकिन कॉ. मानवेंद्र नाथ रॉय के अनुसार "मिटा देने' की भावना मार्क्सवादी धारणा के अनुकूल नहीं है क्योंकि यह आत्मीय भावना है। मार्क्सवादी धारणा के अनुसार 'मिटा देने' की जगह 'मिटना' अर्थात'विलीन होना' अधिक उपयुक्त है। व्यक्तिगत संपत्ति के विलीन होने से ही उत्पादन के साधनों पर सामूहिक अधिकार हो सकता है। लेकिन यह होगा कैसे?

मार्क्सवाद का एक मूल सिद्धांत है कि जबतक कोई समाज व्यवस्था समाज के लिए हितकारी है, वह मिटाई नहीं जा सकती, क्योंकि वह आवश्यकता के बल पर खडी है। जो आवश्यक है, वह उचित भी है। जब कोई समाज व्यवस्था लाभकारी नहीं रहती तब उसे समाज हित में विलीन हो जाना चाहिए। अब विलीन होना आवश्यक भी है और उचित भी। यही समाजवाद का नैतिक औचित्य भी है और तार्किक आधार भी। जब कोई व्यवस्था विलीन होती है तो उसका स्थान दूसरी व्यवस्था ले लेती है। विलीन होने वाली व्यवस्था में ही नई व्यवस्था के बीज होते हैं। वह किसी शून्य से नहीं उभरती। इस बदलाव में कई सदियाँ और युग समा जाते है।

लेकिन समाज व्यवस्था राजनीतिक संगठन पर आश्रित रहती है। भले ही कोई आर्थिक व्यवस्था समाज के लिए अनुपयोगी हो जाए, इतना ही नहीं अगले विकास में बाधक हो जाए, तो भी वह राजनीतिक संगठन के सहारे टिकी रह सकती है। यहीं क्रांति की आवश्यकता आ खडी होती है।

१२ **लोकतंत्र और समाजवाद**

*लिकथिम ने एक जगह लिखा था कि चुनाव, लोकतंत्र और समाजवाद इनके बीच करना है। लेकिन लिकथिम की दुनिया से निकलकर हम आज की हमारी दुनिया में पहुँचे तो लगता है यह प्रश्न ही अप्रासंगिक है।

*आज दुनिया ने लगभग मान लिया है कि चाहे इसमें कितनी ही खामियां हो लेकिन दुनिया के सामने आगे बढने के लिए लोकतंत्र के अलावा और कोई विकल्प नहीं है।

*आज ही नहीं तो तत्कालीन समाजवादी विचारधारा में भी, चाहे वह संशोधनवादी बर्नस्टीन के नेतृत्ववाला गुट हो, मूलगामी लक्जमबुर्ग का हो या फिर संभलकर चलनेवाले काऊत्स्की का हो, इन्होंने कभी बिना जनतंत्र और मूल नागरिक अधिकारों के, समाजवाद की कल्पना नहीं की ।

१३ **समाजवाद के आधार**

समाजवाद की सभी धाराओं की विशेषताएं रही हैं-समानता, मानवऐक्य, गैरशोषणात्मक संबंध, सामाजीकरण, आधुनिकता, आंतरराष्ट्रीयवाद, बुद्धिवाद, सहिष्णुता, कट्टरता तथा युद्ध का विरोध।

*बरकी के अनुसार समाजवादी विचारधारा में मूल चार रुझानें रही हैं--समानता, नैतिकता, तर्कवाद, और मुक्तिवाद।

*इसकी प्रेरणा रही है मूल्यों की वह व्यवस्था जो सर्वप्रथम फ्रेंच क्रांति के दौरान सामने आयी। मुक्ति, समानता और बंधुता।

*समाजवाद एक ऐसे बौद्धिक चिंतन से उद्भूत है जिसका लक्ष गरीबों, उत्पीडितों तथा अधिकारों से वंचित लोगों के प्रति चिंता, करुणा और समानता से परिपूर्ण, न्यायपूर्ण समाज का निर्माण है।

*परिस्थितियां मनुष्य के आगे बढने पर बंधन डाल देती हैं। साथ-साथ विकल्प भी देती है। मनुष्य अपनी क्षमताओं के आधार पर इन बंधनों को तोडने का प्रयत्न करते हैं। विकल्प को चुनने की क्षमता ही उसके नेतृत्व का, उसकी रचना का, चिंतन की महानता का मापदंड होता है। इतिहास में कुछ अनिवार्य नहीं होता। जब किसी बात की अति आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है तो आप उसे अनिवार्य कह सकते हैं। प्रत्यक्ष में तो विकल्प उपलब्ध रहते ही हैं। दुनिया को वास्तविकता की दृष्टि से देखते हुए ही क्रांति और समाजवाद, जो एक दूसरे से जुडे हुए हैं, के रूपों के विकल्पों में से चुनाव करना होगा। वास्तव में समाजवाद विशुद्ध लोकतंत्र ही है। लोकतंत्र का एक अधिकतम निर्दोष रूप।

*समाजवाद संपत्ति के स्वरूप से काफी व्यापक संकल्पना है। वह केवल रोटी से जुडा सवाल नहीं है बल्कि एक गौरवशाली विश्व विचारधारा है। रोटी और स्वतंत्रता इन्हें एक-एकदूसरे के विरोध में खडा करना मक्कारी है-

'एक छलावा था रोटी को स्वतंत्रता का पर्याय बनाना। इतिहास ने सिध्द किया, रोटी आजादी का पर्याय नहीं है। जनता को रोटी की तकलीफ नहीं थी, आजादी की तकलीफ थी।'

१४ **समाजवाद के अंतर्गत तीन धाराएं।**

समाजवाद

1) कम्युनिस्ट

2) सोशल डेमोक्रेट

3) अराजकतावाद

संक्षेप में

समानताएं-

1) सभी, पूंजीवाद और पूंजीवादी राज्य की समाप्ति चाहते हैं।

2) सभी असमानता और शोषणमुक्त समाज की स्थापना चाहते हैं।

3) सभी धनोपार्जन के साधन सार्वजनिक नियंत्रण में लेना चाहते हैं।

1) कम्युनिस्ट-

*लुईस ऑगस्ट ब्लांकी (1805-81)

*अधिकतर चिंतक इन्हें ही ' सर्वहारा अधिनायकत्व' शब्दों का आविष्कारक मानते हैं। उनके लिए इसका अर्थ था, संगठित अल्पमत द्वारा शासन। क्रांति के लिए एक छोटी संगठित और अनुशासित पार्टी को और उसकी तानाशाही को वे आवश्यक मानते थे। सशस्त्र विद्रोह में उनका विश्वास पूर्ण और अडिग था। उन्होंने पूंजी को' चुराया हुआ श्रम' कहा।

ब्लांकी बैबुफ से प्रेरित थे।

* ब्लांकी के उत्तराधिकारी

1) पीटर निकितिच काचेव (1844-1886)

2) व्लादिमीर इलिच्च लेनिन (1870-1924)

*धीरे-धीरे विकास कम्युनिस्टों को भी पसंद नहीं।

*पूंजीवाद के विरुद्ध बगावत द्वारा जबरदस्ती से सत्ता हथियाकर, श्रमिकों का राज्य स्थापित करना चाहिए। इन्हें संसदीय उदारवाद मान्य नहीं था। सर्वहारा क्रान्ति पूंजीवादी राज्य नष्ट करेगी। लेकिन वर्गहीन हो जाने पर समाज को राज्य की आवश्यकता नहीं रहेगी और वह लुप्त हो जाएगा। पूंजीवादी राज्य के विनाश के बाद और सर्वहारा राज्य लुप्त होने के बीच

मजदूर वर्ग का संक्रमणकालीन शासन होगा। क्रांति की रक्षा के लिए इसका अधिनायकवादी होना आवश्यक है। इस धारा को व्यवस्थित रूप मार्क्स-एंगेल्स इन्होंने दिया।

(2) सोशल डेमोक्रेसी

*राज्य संस्था को नष्ट करना इन्हें मंजूर नहीं। लोकतंत्रप्रधान राज्यसंस्था के माध्यम से पूंजीवाद को नष्ट करके समाजवाद लाया जाना चाहिए।

*.अर्थात धनोत्पादन के साधन सार्वजनिक करने का काम धीरे-धीरे जनमत बनाकर तथा थोडे-थोडे सुधार करते हुए क्रमशः होना चाहिए, अर्थात अधिनायकवाद का प्रखर विरोध।

वर्गयुद्ध के सिद्धान्त का मात्र विरोध।

ब्लांक

*ब्लांक, सायमन सिमोन के विचारों से प्रभावित थे।

*ब्लाँक को प्रथम सोशल डेमोक्रेट कहा जा सकता है। (कोल)

*1869 में लिबनेश्ट और बेबेल द्वारा स्थापित सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी और आइझेनाखवादी गुट एक हो गए। फिर 1875में इनमें लासेलवादी All German Workers Association शामिल होने के बाद सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी का जन्म हुआ और जर्मनी में समाजवादी आंदोलन सबसे मजबूत हो गया। ऐसी अपेक्षा की जाने लगी कि जर्मनी में समाजवादी क्रांति होने को ही है।

इस पार्टी ने आतंकवादी गतिविधियों का सख्त विरोध किया, फिर भी उस समय विद्यमान शासन इसे खतरनाक ही मानता था।

*इसके एक महत्वपूर्ण नेता थे फ्रांस मेहरिंग। मार्क्स की पूर्ण जीवनी सर्वप्रथम इन्हींने लिखी।

(लक्जेमबुर्ग, जेटकिन, कार्ल लिबनेक वामपंथी जर्मन समाजवादी थे।)

3) अराजकतावाद

राज्य : यह सामाजिक अन्याय का स्रोत है अत: इसे तुरंत उखाड फेंकना चाहिए। क्रमविकास के सहारे समाजवाद आना असंभव है अतः एक ही मार्ग है, क्रांति।

जिराल्ड विन्स्टेन्स्ले(1609-60)+ विलियम गॉडविन (1756-1836) इनकी रचनाओं से इस विचारधारा की शुरुआत हुई। इस धारा के अगले चिंतक प्रुधो (1809-65), माइकल बाकुनिन (1815-76), प्रिंस क्रोपाटकिन थे।

इसने मार्क्सवाद को जबरदस्त चुनौती दी। कम्युनिस्टों के, क्रांति के बाद केअधिनायकवाद के सिद्धान्त का विरोध किया और कहा कि इसके सहारे जनता में क्रांति के विषय में अंधविश्वास उत्पन्न किया जाता है। संक्रमणकालीन सर्वहारा राज्य यही इन दोनों के बीच महत्वपूर्ण अंतर है। फर्क केवल इतना था कि, राज्य मशीनरी का अंत, अराजकतावादी तुरन्त चाहते थे तो मार्क्सवादियों का वह अंतिम उद्देश्य था। वे इसके लिए लम्बे समय तक श्रमिक राज्य के नेतृत्व में समाज को तैयार करना आवश्यक मानते थे।

लेकिन अराजकतावाद का न कहीं प्रयोग हो सका, न वह औपचारिक विचारधारा बन सकी।

*विल्हेम वेटलिंग (1808-71)ने अपनी रचना "Humanity as it is and it ought to be" में येसू ख्रिस्त को कम्युनिस्ट बताया। सामाजिक गरीबी के लिए धन को उत्तरदायी बताया। अन्यायपूर्ण और शोषक समाज को नष्ट करने का आवाहन किया।

•

१५ क्रांति

*क्रांति की भाषा उग्र क्रांतिकारियों के मुंह से सुनने को मिलती है तो दूसरी ओर गांधीवादी अण्णा हजारे द्वारा चलाए गए आंदोलन में भी 'इन्कलाब जिंदाबाद' का नारा सुनाई देता है। अर्थात 'क्रांति' इस संकल्पना के प्रति मनुष्य में एक विलक्षण आकर्षण है।

*उन्नीसवीं सदी तक इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जिसमें सत्ताधारक ने स्वेच्छा से पदत्याग किया हो। अतः परिवर्तनवादी क्रांतिकारियों के सामने सत्ता को जबरन छिन लेने के अलावा और कोई मार्ग नहीं होता था। सत्ता, शासन या व्यवस्था के माध्यम से ही इप्सित साध्य संभव है यह स्पष्ट दिखता था। इस छिना-झपटी में खून-खराबा होना अटल होता था। कोई इसे अनिवार्य बताता था तो कोई न्यूनतम रखने की पैरवी करता था।

* क्रांति के प्रति चिंतकों के विचार-

*पागल अत्याचारों से वास्तव क्रांति नहीं होती। लोग विध्वंस करते हुए चलते हैं। लेकिन ऐसे विध्वंस के बाद, क्या निर्मिती करनी है इसकी कल्पना उनके पास नहीं होती और इसका परिणाम अक्सर यह होता है कि एक जुल्मी सत्ता का जाना और उसके स्थान पर दूसरी जुल्मी सत्ता का जनता के सिर पर बैठना। फ्रेंच राज्यक्रांति ने बुर्बोन राजघराने को तो धूल में मिला दिया लेकिन फिर भी नेपोलियन के अधिनायकवाद से वह बच नहीं सकी। इसलिए वास्तव में समाज क्रांति होते समय नेतृत्व को या जनता को स्पष्ट ज्ञात होना चाहिए कि नई समाज व्यवस्था कैसी बनानी है। विध्वंस नहीं तो पुनर्रचना क्रांति का ध्येय होना चाहिए। हां, नई समाज व्यवस्था जन्म लेते समय पुरानी को कुछ यातनाओं में से तो गुजरना ही पडेगा। यह प्रकृति का ही नियम है।

*क्रांति की शुरू की अवस्था में जनता का उत्साह असीमित होता है और उस अवस्था में वह चाहे जो कर डालती है। लेकिन एक बार वह ढलान पर आयी कि उत्साह बडे तेजी से उतर जाता है।

*क्रांति इतनी दुर्बल नहीं होनी चाहिए कि आलोचना से उलट जाए। उसपर जनता की श्रध्दा होनी चाहिए।

क्रांति:रोझा लक्झेमबुर्ग (1871-1919) जर्मनी

"या तो क्रांति तीव्र, तूफानी गति से, निर्णायक लय-ताल के साथ आगे बढे, सभी बाधाओं को फौलादी हाथों से तोड दे और अपने लक्ष्यों को अधिकाधिक ऊंचा तय करें। अन्यथा उसे पीछे ढकेल दिया जाएगा, उसके कमजोर प्रस्थान बिंदु के पीछे और वह, प्रतिक्रांति द्वारा कुचल दी जाएगी। कहीं स्थिर हो जाना, एक बिंदु पर आकर समय काटना, पहले ही उद्दिष्ट से संतुष्ट हो जाना, यह क्रांति में संभव ही नहीं।

"यह स्पष्ट है कि क्रांति में उसी पार्टी के हाथों में नेतृत्व और सत्ता आती है, जिसमें क्रांति को आगे बढाने के लिए उपयुक्त नारे देने का और उत्पन्न स्थिति से सभी आवश्यक निष्कर्ष निकालने का साहस होता है।"

रूसी क्रांति के विषय में लक्जेमबुर्ग

"अक्टूबर क्रान्ति का बचाव करते हुए, उसे सर्वहारा की कोशिश के रूप में उसकी सराहना करते हुए बोल्शेविक पार्टी, उसके नेताओं के अदम्य साहस, दृढ निश्चय, स्पष्ट दृष्टि के लिए उन्हें दाद देनी होगी।"

"जो देश विश्व युद्ध से थक गया हो, साम्राज्यवाद से घिरा और कुचला गया हो,अंतर्राष्टीय सर्वहारा से धोखा खा बैठा हो, उसमें एक आदर्श, त्रुटिहीन सर्वहारा क्रान्ति होना चमत्कार ही होगा।"

लेकिन जब संविधान भंग कर दिया गया, आम चुनाव पूरी तरह समाप्त कर दिए गए, सार्वत्रिक मताधिकार को अनावश्यक बताया गया तब रोझा लक्झेमबुर्ग की बोल्शेविक के बारे में तीखी आलोचना और टिप्पणियां शुरू हो जाती हैं।

"जनसंख्या के बहुमत के बावजूद, सत्ता पर कब्जा करने के बाद, उसपर स्वयं को बनाए रखने के लिए आतंक का सहारा नहीं लेना चाहिए और न ही आजादी और प्रतिनिधित्व के सारे रूप अस्वीकार कर देने चाहिए। जनतांत्रिक संस्थाएं समाप्त कर देना, जनजीवन को पंगु बनाना और समाप्त करना है।"

"मैं स्वयंस्फूर्त क्रांति की पक्षधर हूँ, लेकिन असफल क्रांति के स्थान पर विकृत क्रांति से बहुत घबराती हूँ।"

क्या समाजवाद धीरे-धीरे लाया जा सकता है या क्रांति एकमात्र रास्ता है? यहाँ उन्होंने क्रांति का पक्ष लिया।

रोझा आगे-

"लेनिन -ट्राट्स्की का अधिनायकवादी सिध्दांत मूल रूप से यह है; समाजवादी क्रान्ति करने का फार्मूला क्रांतिकारी पार्टी के पाकिट में हमेशा तैयार रहता है। इसे सिर्फ बाहर निकालकर लागू भर करना है। दुर्भाग्यवश या सौभाग्यवश बात ऐसी नहीं है। बना-बनाया नुस्खा न होकर, समाजवाद एक आर्थिक, सामाजिक, न्यायिक व्यवहार है, जो भविष्य की धुंध मे छिपा रहता है। हमारे कार्यक्रम में आगे के रास्ते के मात्र कुछ चिन्ह ही मिलते हैं, जो हमें आवश्यक कदम उठाने में मदद करते हैं।--विकास के स्वरूप आगे इतिहास द्वारा तय होते हैं। यह स्वरूप आराम कुर्सी पर बैठकर पहले ही क्रांतिकारियों द्वारा तय नहीं किए जा सकते ।----सर्वहारा पार्टी की जिम्मेदारी जनता में क्रांति और समाजवाद की चेतना तथा इच्छा पैदा करनी थी और यह काम षडयंत्रों के जरिए नहीं हो सकता।---जब समाजवादी सिद्धांत लाने के लिए, हजारों छोटे-बडे व्यवहारिक कदमों के ठोस रूप तय करना होगा तो वे किसी भी समाजवादी पार्टी, प्रोग्राम या पाठ्यपुस्तक में नहीं मिलेगी। यह कोई त्रुटि या कमजोरी नहीं है। बल्कि यही वह चीज है जो वैज्ञानिक समाजवाद को कल्पनालोक के समाजवादों से बेहतर बनाती है। समाज की समाजवादी व्यवस्था एक ऐतिहासिक उत्पादन ही होना चाहिए और हो सकता है, जो अपने ही अनुभवों की पाठशाला से, अपने ही निर्माण के दौर में से, जीवन्त इतिहास (जो अन्त में उसीका एक अंश बनती है।) के विकासक्रम में पैदा हुई हो।

समाजवाद का स्थान, प्रशासन के निर्देश नहीं ले सकते क्योंकि यह एक जीवन्त ऐतिहासिक आंदोलन है। यदि जनजीवन ठीक से नियंत्रित नहीं किया गया तो वह एक अफसरों के संकीर्ण गुट के हाथों में पहुँच जाएगा और इससे राजनीतिक जीवन में भ्रष्टाचार पैदा हो जाएगा।---सभी ढंग की आजादी होना ही चाहिए। अन्यथा नौकरशाही जडे जमा लेगी और श्रमिकों की सच्ची प्रतिनिधि माने जाने वाली सोवियतें पंगु और निष्क्रिय हो जाएगी। सर्वहारा का अधिनायकवाद एक गुट की तानाशाही में बदल जाएगा।

रूसी क्रांति

क्रांतिपूर्व रूस (19 वीं सदी के सातवें दशक तक)

*कारखाने खुलते जा रहे थे। उन्हें चलाने के लिए श्रमिकों की आवश्यकता थी। वे पूर्व समाजव्यवस्था अर्थात सामंती व्यवस्था से ही उपलब्ध हो सकते थे। लेकिन इस व्यवस्था के श्रमिक तो सामंतों के एक तरह दास ही थे। वे उन्हें मुक्त क्यों करने लगे? इस कारण भूदासत्व पूरे आर्थिक विकासक्षेत्र अर्थात कारखानों का उत्पादन तथा व्यापार वृद्धि के रास्ते में अवरोध का काम ही कर रहा था। यहीं पुरानी सामन्ती समाजव्यवस्था और नई पूंजी पर आधारित व्यवस्था में टकराव का आधार था।

*ऐसी स्थिति में भूदासों के विप्लव तो होने ही थे।

*झार की सेना में भी असंतोष था।

* भूदास प्रथा और स्वेच्छाचारी प्रशासन, उत्पीडन - शोषण के प्रति समाज के कुछ संभ्रांत तथा बुद्धिजीवियों में भी तीव्र विरोध था।

*अतः गुप्त क्रांतिकारी संगठन, एक के पीछे एक बनने लगे थे। उन्होंने समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों को आधार बनाया।

प्रथम सशस्त्र विद्रोह का प्रयत्न दिसम्बर 1825 में हुआ। यह असफल रहा। ये क्रांतिकारी' दिसम्बरी' कहलाए।

*ऐसे ही क्रांतिकारी विद्रोहों के फलस्वरूप 1861 में कृषक सुधार हुआ जिसके द्वारा भूदासत्व का उन्मुलन हुआ।

*मुक्त हुए भूदास और बेकार हुए छोटे कृषकों के कारण श्रमिकों की संख्या बढने लगी। जहां तक औद्योगिक श्रमिकों का प्रश्न है, यूरोप के किसी भी अन्य देश की तुलना में, रूस में उनकी स्थिति सबसे अधिक अमानवीय थी।

*'नरोदनिक' नाम के जनवादी आंदोलन ने रूस में सर्वप्रथम मार्क्सवादी विचारधारा का प्रसार किया। लेकिन उन्होंने व्यक्तिगत आतंकवाद को अपनाया।

*दोनों ओर से (शासन और गुप्त संगठन) आतंक फैलाने की गतिविधियाँ चलती रहीं।

*1875में रूस में सर्वहारा के सर्वप्रथम क्रांतिकारी संगठन बनाए गये। ओदेस्सा बंदरगाह में ' दक्षिणी रूस मजदूर संघ', सेंट पिट्सबर्ग में 'उत्तरी रूसी मजदूर संघ'। लेकिन उन्हें सरकारी मशीनरी ने जल्दी ही कुचल दिया।

*लेकिन समय के साथ मजदूर आंदोलन सशक्त हो रहा था। इससे डरकर 1886 में झार तृतीय ने एक कानून जारी करके मालिकों द्वारा मजदूरों पर लगाएं जानेवाले जुर्माने की सीमा निर्धारित कर दी। यह मजदूर आंदोलन द्वारा झारशाही से वसूल की गयी प्रथम बडी रियायत थी।

*1870में स्विटझरलंड में रहनेवाले निर्वासित रूसी क्रांतिकारियों के एक दल ने अपने को' प्रथम इंटरनेशनल' की शाखा घोषित किया। इन्हिंमें से एक गर्मान लोपातिन ने 'पूंजी ' के प्रथम खंड का रूसी अनुवाद किया। यह दुनिया में हुआ इस ग्रंथ का प्रथम अनुवाद था।

*1882में भूतपूर्व नरोदनिक गार्गी प्लेखानोव्ह ने 'कम्युनिस्ट घोषणा पत्र' का रूसी अनुवाद किया और 1883और में अपने सहयोगियों के साथ मिलकर जेनेवा स्विटझरलंड में पहले रूसी सामाजिक जनवादी संगठन की स्थापना की। जिसे'श्रम मुक्ति दल' नाम दिया गया।

*1893में लेनिन सेंट पिट्सबर्ग आए। उस समय वहां कोई बीस भूमिगत सामाजिक जनवादी ग्रुप थे। 1895के शरद ऋतु में लेनिन के आग्रह पर ये सभी ग्रुप' मजदूर मुक्ति संघर्ष ग्रुप लिग' नामक एक नये संगठन में ऐक्यबध्द हो गये। 1896में उन्होंने सेंट

पिट्सबर्ग की कपडा-मिलों में हडताल का संचालन किया। इसमें 30000 श्रमिकों ने हिस्सा लिया। यह रूसी श्रमिकों की अबतक की सबसे बडी हडताल थी।

*सन 1900 में साइबेरिया में निर्वासन की सजा काटकर लेनिन वापस आये थे। उनकी पहल पर रूसी क्रांतिकारियों ने विदेश से 'ईस्क्रा' (चिनगारी) नामक भूमिगत पत्र का प्रकाशन शुरू किया। इसने क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

*पार्टी के नेतृत्वकारी निकायों के चुनावों में लेनिन तथा उनके समर्थकों को अच्छा समर्थन प्राप्त हुआ था। इसी कारण वे तभीसे बोल्शेविक (रूसी-बोलशिस्त्वों-बहुमत) और उनके विरोधी मेन्शेविक (मेनशिस्त्वों-अल्पमत)कहलाने लगे। मेन्शेविक शुरू में बहुमत में थे। वे नरम दल के मार्क्सवादी थे।

पार्टी का दूरगामी लक्ष्य था: समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी समाज का निर्माण।

रूसी क्रांति-----(cont)

देश में असंतोष बढता जा रहा था। रविवार 9 जनवरी 1905 को डेढ लाख मजदूरों की भीड, झार को अपना मांगपत्र पेश करने उसके महल की तरफ निकली। लेकिन सेना ने उसका स्वागत गोलियों की बौछार से किया।एक हजार लोग मारे गए। यह दिन इतिहास में 'खूनी रविवार' के नाम से कुख्यात है।

*जगह– जगह हो रही हडतालों के संचालन के लिए, हर केंद्र में कमेटी बनाई गई। शुरू में इसे ही 'सोविएत' कहते थे। भारी दबाव के कारण झार ने एक वैधानिक परिषद बनाने का वादा किया-डयूमा। डूमा का अर्थ है-विचार करने का स्थान।

*1905 के इस उथलपुथल ने एक क्रांति का रूप ले लिया था। लेकिन झार ने इसे कुचल डाला। बिना मुकदमा चलाए एक हजार लोगों को फांसी पर चढा दिया गया। सत्तर हजार जेल में ठूंस दिए गए। इन बगावतों में चौदह हजार लोगों ने अपने प्राण गवाएं।

अंत में अक्तूबर 1905 में देशव्यापी राजनीतिक हडताल हुई। बीस लाख श्रमिकों की हडताल। अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन के इतिहास में अबतक की सबसे बडी हडताल।

अक्टूबर क्रान्ति

रोमेनोफ का राजवंश 300 वर्षों के निरंकुश शासन के बाद, रूसी रंगमंच से हमेशा के लिए लुप्त हो गया।

*1917 में रूस में प्रत्यक्ष में दो क्रांतियां हुईं। एक 8 मार्च से 12 मार्च के बीच। तो दूसरी नवंबर में। लेकिन दरम्यान का समय असमंजस, अनिश्चितता, अकर्मण्यता और अराजकता का था। वास्तव में क्रांतिकारी नेता या तो जेल में थे या निर्वसन में। इस दरम्यान रूस की स्थिति और बिगड गयी। 17 अप्रैल को लेनिन का रूस में आगमन हुआ। इसके एक महिने बाद ट्राट्स्की पेट्रोग्रॅड आ गया था। लेनिन भी पेट्रोग्रड की सरहद पर पहुंच गए थे। बोल्शेविकों को विश्वास हो गया कि अगर क्रांति को बचाना है तो सत्ता छिन लेने का वक्त आ गया है। क्योंकि मेन्शेविक और क्रांतिकारी समाजवादी पार्टियाँ नकारा सिध्द हुई थीं।

25 अक्टूबर (उस समय के असंशोधित रूसी पंचांग के अनुसार) या संशोधित पंचांग के अनुसार 7 नवंबर 1917 को बोल्शेविकों ने सत्ता हस्तगत कर ली (बिना किसी प्रतिरोध के)। तीन घंटे के अन्दर ही रूस को सोवियत समाजवादी जनतंत्र घोषित किया गया। लेनिन के नेतृत्व में जन-कमिसार परिषद बनाई गयी।

क्रांति के बाद रूस की स्थिति-

1) कृषि प्रधान देश होकर भी, कृषि पिछडी अवस्था में थी।

2) औद्योगिक विकास भी बहुत कम था।

3) रूसी सेना छिन्न-भिन्न हो गयी थी।

4) आर्थिक ढांचा टूट चुका था।

5) खाद्य सामग्री की भारी कमी हो गयी थी।

6) बिखरी सेना और असामाजिक तत्वों ने देश में लूटपाट मचा रखी थी।

7) क्रांति के कारण जिन्के स्वार्थों को चोट पहुंची थी वे इस ताक में थे कि क्रांति को कैसे कुचल डाला जाए। इसलिए वे अन्दरूनी तोडफोड के ताक में थे। पूंजीपति प्रत्यक्ष अपने ही कारखानों में तोडफोड कर रहे थे। अतः सरकार को तेजी से उन्हें कब्जे में लेना पडा।

8) रूस के दुष्मन जर्मन, शर्मनाक शर्तों पर सुलह चाहते थे। अन्यथा वे पेट्रोग्रॅड की तरफ बढने लगे। उन्हें क्रांति विरोधीयों का साथ मिलने लगा।

जब पेट्रोग्रॅड पर जर्मनों का कब्जा होने का खतरा पैदा हुआ तो सोवियत सरकार मास्को चली आई और तबसे वहीं रूस की राजधानी है।

9) आगे रूस की कम्युनिस्ट सत्ता को कुचलने कई देशों की सेनाएं, झार के जनरल्स आदि के 17 मोर्चों पर बोल्शेविक सत्ता को जूझना पडा। गृहयुध्द 1920 तक चलता रहा।

<u>बोल्शेविक रूस ने तुरंत अंमल में लायीं नीतियां और उनका क्रियान्वयन।</u>

*लेनिन ने यह सिद्धान्त निश्चित कर लिया था: जो काम न करे वह खाना भी न खाएँ। जो काम न करे उसे रोटी न मिले।

*स्थापना के चौथे दिन आठ घंटे का कार्यकाल निश्चित किया गया।

*सभी जमीनदारों, मठों, गिरजाघरों की भूमि और उससे जुडी सभी चल—अचल संपत्ति बिना मुआवजे के जब्त कर ली और भूमि पर निजी स्वामित्व समाप्त कर दिया गया। किसानों को मुफ्त में, 15,00,00,000 हेक्टेयर भूमि आवंटित कर दी गई। किसानों के 3 अरब स्वर्ण रूबल के कर्ज माफ कर दिए गए।

*दिसम्बर 1917 में अपने घोषणापत्र पर अमल करते हुए, फिनलंड की स्वतंत्रता को मान्यता दे दी गई जो अब तक रूसी साम्राज्य का हिस्सा था।

*23 फरवरी 1918को नयी, मजदूर- किसानों की लाल सेना गठित की गई। इसके गठन की जिम्मेदारी ट्राट्स्की को दी गई। गृहयुद्ध और बाहरी मोर्चों पर लडने के मुद्दे नजर 1920 के मध्यतक लाल सैनिकों की संख्या 53लाख हो गयी ।

अंतत: सभी मोर्चों पर सफलता हासिल करते हुए इस सेना ने क्रांति की रक्षा की।

*लेकिन सोवियत सरकार प्रतिक्रांतिकारियों के आतंक और अनगिनत विध्वंसात्मक षडयंत्रों का जबाब "लाल आतंक" से देने को बाध्य हुई। बोल्शेविकों पर चारों तरफ से हमला हो रहा था। वे चारों तरफ से षडयंत्रकारियों और जासूसों से घिरे थे। अतः वे जरासे संदेह के ऊपर बडी सख्त सजा दे देते थे। पिट्सबर्ग की सात सदस्यों वाली एक बोल्शेविक कमेटी में तीन आदमी ऐसे थे जिनके बारे में बाद में पता चला कि वे झार के खुफिया विभाग के सदस्य थे।

बोल्शेविकों की एक छोटी जमात ड्यूमा में भी थी और मालिनोवस्की इसका नेता था। लेनिन का इसपर भरोसा था। बाद में यह पता चला कि यह भी झार के प्रति वफादार पुलिस का आदमी था।

लेकिन गृहयुद्ध समाप्त नहीं हुआ कि 1921में रूस में भयंकर सुखा पडा। जब विदेशी सेनाएँ देश को रौंदती हैं, चारों ओर नाकेबंदी है, तो न किसान खेत में अनाज पैदा कर सकते हैं, न मजदूर कारखाने में उत्पादन कर सकते हैं।

लाल सेना को अंतिम सफलता 25 अक्तुबर 1922 को जापानी सेना पर मिली। सोवियत की तरफ से सरकारी तौर पर बताया गया कि रूस के, विदेशी हस्तक्षेप की लडाई में, साढे तेरह लाख आदमी मारे गए। यूरोप के अन्य देशों के मजदूरों में इस नए रूस के प्रति बडी हमदर्दी थी।

1923 में सोवियत संघ अस्तित्व में आया। सरकारी नाम "Union of Socialist and Soviet Republics" (U.S.S.R.) 'समाजवादी सोवियत प्रजातांत्रिक संघ'।

सोविएत रूस

उस समय रूस 182 जाति समूहों से बना था। इनमें से कइयों में एकदूसरे के साथ जाति संघर्ष का इतिहास था। उनमें समरसता पैदा करने की चुनौती थी। रूसी संघ के अंतर्गत एशिया महाद्वीप का1/3 हिस्सा, यूरोप का आधा हिस्सा आता था। उसका क्षेत्र दुनिया का1/6 हिस्सा था। वहा130 भाषाएं बोली जाती थीं।

रूसी क्रांति के बाद वहां के शासन ने जो काम किये वे दुनिया में पहली बार ही हो रहे थे। यह प्रथम प्रयोग होने के कारण उसमें लाख खामियां रहीं हो लेकिन एक अच्छी दुनिया बनाने का प्रयत्न तो वह अवश्य था। इतना ही नहीं तो दुनिया ने इस दिशा में बढने के लिए उसने उत्प्रेरक का काम किया।

एक सुखदायी समाज की निर्मिति के लिए आवश्यक है कि समाज का हर व्यक्ति न्यूनतम आवश्यकताओं के साथ स्वाभिमान से निश्चिंत जीवन जीए। उसे किसीके सामने गिडगिडाने की जरूरत न हो। लेकिन इसके लिए मूलभूत आवश्यकता है, उसे जीवनयापन का साधन उपलब्ध करवा देना। बेरोजगारी का समूल उच्चाटन हो। मनुष्य को रोजगार का अधिकार मिले।

19 वीं शताब्दी के दौरान बुर्जुआ वर्ग के प्रतिनिधि तर्क देते थे कि 'काम पाने के अधिकार का' उत्पादन के साधनों के निजी स्वामित्व के साथ कोई मेल नहीं हो सकता। पूंजीवादी समाज चाहे वह कितना ही उन्नत क्यों न हो, काम पाने का अधिकार नहीं दे सकता। क्योंकि ऐसा अधिकार देकर वह उस व्यवस्था की नींव कमजोर करेगा जिसके लिए जरूरत है 'मजदूरों की रिजर्व सेना का' अनिवार्यतः नियमित रूप से कायम रखना । इसीके आधार पर उसके द्वारा अपनी शर्तों पर श्रमिकों के साथ सौदेबाजी की जाती है, न्यूनतम मजदूरी और अधिकतम मुनाफा।

क्रांति से क्या मिला

*1931 तक रूस से बेरोजगारी को समाप्त कर दिया गया। 1936 के संविधान में लोगों को' काम पाने का अधिकार ' दे दिया गया । यह दुनिया में पहली बार हो रहा था।

गर्भवती स्त्रियाँ एक वर्ष की अवधि तक काम से अनुपस्थित रह सकती थी।

*काम की अवधि को घटाकर सात घंटे कर दिया गया।

*वृद्धावस्था तथा कार्यक्षमता समाप्त होने पर, बिमारी आदि में भरणपोषण प्राप्त होने के अधिकार सभी नागरिकों को दिए गए थे।

*युद्धप्रचार पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

*स्त्रियों को सभी क्षेत्रों में पुरुष के बराबर अधिकार दिए गए। माओं और बच्चों को कानूनी संरक्षण प्राप्त हुआ। संघ में शिशुगृहों और संगोपन गृहों का जाल सा बिछा हुआ है, जहां बच्चों की देखभाल की जाती है, जब माएँ काम पर जाती हैं।

किसी सरकार ने अगर सर्वप्रथम एक स्त्री को राजदूत बनाया हो तो वह रूस है। वृद्ध बोल्शेविक श्रीमती कोलन्ताई को।

*क्रांति पूर्व 70% जनता निरक्षर थी। 1930 में ही सार्वभौम शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। 1936 में इसे माध्यमिक शिक्षा तक विस्तारित किया गया। राष्ट्रीय आय का 8.5 % शिक्षा पर खर्च होता था। स्कूलों में धार्मिक सिद्धांतों की पढाई पर प्रतिबंध था। बच्चों के दिमागों को अवैज्ञानिक विचारों से मुक्त रखने की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। इसीका परिणाम है कि एक समय दुनिया के 25% वैज्ञानिक सोवियत संघ में थे। स्थानीय जाति की भाषाओं में शिक्षा की व्यवस्था थी।

*रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी के लंदन सम्मेलन में लेनिन ने सफलता पूर्वक संघर्ष करके बोल्शेविक गुट बनाया। बाद में बोल्शेविक आंदोलन के अंतर्गत कठोर केंद्रवाद लागू किया।

*स्वास्थ्य सेवाएं सभी के लिए विनामूल्य थी।

*जाति-नस्ल के आधार पर भेदभाव पूरी तरह निषिद्ध था। अंतर्गत पासपोर्ट, निवेदन पत्र, आवेदन पत्र या जनगणना पत्र पर किसी धर्म आदि का कोई उल्लेख नहीं होता था।

*धार्मिक संस्थाओं के काम में सरकार या सरकार के कामकाज में धार्मिक संस्थाओं का हस्तक्षेप निषिद्ध था। लेकिन नागरिकों के लिए यह आजादी थी कि वे किसी धर्म को माने या ना माने।

*क्रांति पूर्व समय में परिवार को निवास पर अपने बजट की 20% तक राशि खर्च करनी पडती थी। उसे घटाकर 5% कर दिया गया।

*सभी उद्योगों का, अनाज के कोठारों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया था, उसी तरह भूमि स्वामित्व का भी। खनिज संपदा राष्ट्रीय संपत्ति बन गई थी।

लेकिन नागरिकों के पास व्यक्तिगत उपयोग के लिए व्यक्तिगत संपत्ति होती थी। व्यक्ति उसे अपने वारिस को दे सकता था।

लेकिन अब कोई व्यक्ति दूसरे के परिश्रम पर मौज नहीं कर सकता था।

*जमीन का कृषकों में वितरण या कुछ हद तक उनका जमीनदारों से छिन लेना, जोतों का आकार लघुतम होने में परिणत हुआ। परिणामत:इन जोतों पर वैज्ञानिक और तकनीकी ढंग से कृषि नहीं हो पा रही थी। इसलिए सामुदायिक/सहकारी कृषि को अपनाया गया।

*पूंजीवादी समाज में जीवन स्तर का पैमाना हमें पता है। लेकिन क्रांति उत्तर रूस में यह मापदंड था, नागरिकों को कितनी आवश्यक सेवाएं मुफ्त में उपलब्ध करायी जा रही थीं।

* खास तौर पर स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाएं मुफ्त थी, सबके लिए समान रूप से उपलब्ध थीं। अत: संपूर्ण सामाजिक समता के तत्व का अपने आप ही क्रियान्वयन होता था।

<u>सोशलिस्ट समाज में वितरण का सिध्दांत। ।</u>

"जितना करो, उतना पाओ"

इस कारण रहन-सहन के स्तरों में मामूली असमानता हो सकती थी। लेकिन प्रयत्न यह था कि उसकी पूर्ति सार्वजनिक मुफ्त सेवाओं द्वारा की जाए।

"प्रत्येक से योग्यतानुसार, प्रत्येक को कार्यानुसार"

यही समाजवादी सिद्धांत था। इसीके साथ यह भी ध्यान रखना होगा कि किमान और कमाल कानूनी अर्जन का अन्तर क्रमशः कम होता जाना चाहिए और सार्वजनिक सेवाओं का व्यय बढते रहना चाहिए।

*कम्युनिज्म के अंतर्गत" प्रत्येक से उसकी योग्यता के अनुसार और प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार" यह तत्व है। समाजवाद के अंतर्गत यह संभव नहीं है। चूंकि उत्पादन की जरूरतें पूरी होने के बाद ही बची रकम सामाजिक ऊद्देश्यों के लिए निर्धारित हो पाती है।

*श्रम प्रतिष्ठा पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में सम्पत्ति और निठल्लापन प्रतिष्ठा के प्रतीक होते हैं। तो सोवियत समाज में वे थे सामाजिक दृष्टि से उपयोगी काम।

*प्रत्येक प्रतिनिधि को अपने कार्यों का ब्यौरा अपने मतदाताओं के सम्मुख प्रतिवर्ष रखना पडता था। मतदाताओं की अपेक्षा के अनुरूप खरा न उतरने वाले प्रतिनिधि को वापस बुलाने का अधिकार मतदाताओं को था। नया चुनाव होता था। प्रत्यक्ष में वैसा होता भी था।

*जहां दूसरों के श्रम पर ऐशोआराम की व्यवस्था ही अस्तित्व में नहीं है वहाँ व्यक्तिगत और सामाजिक हितों में टकराव होने का प्रश्न ही नहीं है। प्रत्येक उत्पादन का लाभ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में समाज के प्रत्येक घटक को मिलना ही है और यही संस्कार बचपन से ही प्रत्येक नागरिक के मन में डाले जाते थे।

*उत्पादन और वितरण पर बाजार-विचलन के असर का प्रश्न ही नहीं था।

*समान अवसरों की संकल्पना वहाँ निरर्थक है जहां आवश्यकता और उपलब्ध संसाधनों की संख्या और उनकी गुणवत्ता में भारी अंतर है। ऐसे समाज में यह सबसे बडा पाखंड है। सुस्थापित सामाजिक प्रतिमानों और वास्तवता में न्यूनतम असंगतिया होनी चाहिए। क्रांति के बाद ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करने के लिए कडी मेहनत की गई थी। ऐसी व्यवस्था में ही व्यक्ति का असली विकास हो सकता है। यही व्यक्ति की वास्तव स्वतंत्रता है।

*नागरी और ग्रामीण द्वंद्

शहरों और गावों के, शहरी और देहातियों के स्वार्थों में सदा संघर्ष होता है। शहरी मजदूर चाहता है कि गांवों से मिलने वाला अनाज और कच्चा माल उसे सस्ता मिले, लेकिन उसने बनाए हुए कारखाने के माल की ऊंची कीमत मिले। ग्रामीण की चाहत इससे उलटी होती है। नई अर्थ नीति का उद्देश यही था कि यह संघर्ष न्यूनतम हो। दोनों के बीच समुचित आर्थिक संबंधों की स्थापना हो।

*योजनाएं

क्रांति के बाद युध्द और गृहयुद्ध के कारण सारा रूस राख और खंडहरों में बदल चुका था। आबादी में दो करोड की कमी हो गई थी। वस्तुओं की भारी कमी थी। उसे पूरी करना था। इतना ही नहीं तो उसके बाद जनता का जीवन स्तर भी ऊपर उठाना था। उत्पादन बढाना था और उसके लिए बुनियादी ढांचे का निर्माण भी करना था। सभी ढंग के अपव्यय पर काबू पाना था। यह नियोजनपूर्वक नियंत्रण के सिवाय कैसे संभव था?और इसके आधार पर ही आगे रूस एक महाशक्ति बन गया। वह भी किसी उपनिवेश के शोषण के बिना। इसके लिए रूसी जनता ने समय-समय पर बडी कुर्बानियां दीं है।

*दुनिया के लिए योगदान

युद्ध और गृहयुद्ध से निपटने के बाद रूस को विकास के लिए शांति की बडी आवश्यकता थी। 10 एप्रिल 1922 के जिनीवा सम्मेलन में सोवियत रूसी प्रतिनिधि मंडल के नेता चिचेरीन ने सर्वप्रथम समाजवादी देश और पूंजीवादी देशों के बीच शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का विचार प्रस्तुत किया। यह शांति, निरस्त्रीकरण और आंतरराष्टीय विवादों के लिए वार्ताओं का रास्ता चुनना था। सभी राष्ट्रों की समानता मान्य करना था। लेकिन इसीके साथ ही रूस ने यह भी घोषित किया कि उपनिवेशवाद और साम्राज्यवादी उत्पीडन के विरुद्ध चल रहें मुक्ति संग्रामों और संघर्षरत राष्ट्रों को वह हर संभव सहायता करता रहेगा। उसने वह की भी। इतना ही नहीं तो स्वतंत्र हुए गरीब देशों के विकास के लिए भारी सहायता दी। यह सोविएत संघ का अस्तित्व ही था कि साम्राज्यवादी राष्ट्रों द्वारा तिसरी दुनिया के शोषण पर काफी हद तक अंकुश लगा रहा।

*सारी दुनिया आज ' कल्याणकारी राज्य 'की अहमियत को मान्यता दे रही है। इसके अंतर्गत अधिकतर संकल्पनाओं के पीछे प्रेरणा रूसी क्रांति के बाद रूस में बनी प्रत्यक्ष व्यवस्था की ही है। इतिहास इस बात को कैसे भूला सकता है?

*सोवियत रूस और रूसी जनता की दुनिया को एक बहुत बडी देन है कि उसने युध्दोन्मादी तथा क्रुर फॅसिझम, नाजिझम तथा हिटलर से दुनिया को बचा लिया। लगभग सारा यूरोप हिटलर के आगे बेबस दिख रहा था। यह रूसी लाल सेना ही थी जिसने बर्लिन पर अंतिम विजय पायी। हिटलर समाप्त हुआ, नाजीझम समाप्त हुआ। दूसरा विश्वयुद्ध समाप्त हुआ। आज हम लोकतंत्र और स्वतंत्रता की बात मुक्त रूप से करने की स्थिति में है। इस युद्ध में सोवियत संघ ने अपने दो करोड लोग गवाएं। 1710 नगर तथा 70000 बस्तियां खंडहर बन गई थीं। आर्थिक दृष्टि से हुई क्षति का मूल्य 26 खरब रूबल (तत्कालीन) आंका गया था।

समाजवाद का रूसी प्रयोग असफल?

*समाजवाद का रूसी प्रयोग असफल हुआ ऐसा कहा जाता है। इस प्रयोग में लाखों कमियां हो लेकिन उसने यह सिद्ध किया कि समाजवाद की संकल्पनाएँ प्रत्यक्ष में उतारी जा सकती हैं। दुनिया के वंचितों में आशा का जबरदस्त संचार कराया कि हम भाग्य के हाथों में केवल खिलौने नहीं हैं।

भले ही समाजवादी चिंतकों की भविष्यवाणियां शतप्रतिशत वास्तव में न उतरी हो लेकिन उस दिशा में बढने के लिए उसने दुनिया को मजबूर किया।

*कम्युनिज्म के धाराशायी होने के पीछे कहा जाता है कि उसकी अनम्यता (Rigidity), एक बडा कारण है । हो सकता है इसके लिए कारण उस समय की स्थिति रही हो। चिंतकों ने इसे ' चिंतन का प्रस्तरीभूत होना '(Fossilisation) कहा है। तानाशाही की एकान्तिकता 'समाजवाद' की मूल भावना से मेल खाने वाली नहीं थी।

*चीन की सांस्कृतिक क्रांति, कंबोडिया की भयावह घटनाएं आदि, मूल उद्देश्य पाने में असफल रही हैं। उत्तर कोरिया का शासन आज भी इसकी याद दिलाता है। हंगेरी में 1956 में, चेक गणराज्य में 1968में, पोलैंड में 1956 तथा दोबारा नववे दशक के दौरान, सोवियत दबाव के विरुद्ध तीव्र बगावतें हुईं।

चीनी लोक गणराज्य, अल्बानिया आदि के साथ सोविएत रूस के संबंध सामान्य नहीं रहे। 1945 में कॉ. टिंटो ने युगोस्लाविया का निर्माण किया। लेकिन शायद यह गलत सिद्धान्त अपनाते हुए अलग दिशा पकडी। उनके सिद्धांत के अनुसार संक्रमण के दौरान वर्गकलह तीव्र नहीं होता, समाजवादी क्रान्ति की दिशा में अपने आप संक्रमण होता रहता है। कुछ अन्य चिंतकों के अनुसार संक्रमण काल में वर्गकलह कम नहीं होता उलटा अधिक तीव्र हो उठता है।

*सातवें दशक में लैटिन अमेरिकी देशों के युवाओं में जिसने धूम मचाई थी वह व्यक्ति था चे ग्वेरा। लैटिन अमेरिकी देशों में क्रांति की मशाल जलाने के लिए वह देश-देश घूमता रहा और अंततः 9 अक्टूबर 1967 को बोलिविया में सरकारी गोलियों का शिकार हुआ। उस समय वह 39 वर्ष का था। आज भी उसकी फोटो वाली बनियनें पहने युवा आपको दिखेंगे।

*एक तरफ तो सोवियत संघ से मार्क्सवाद बिदा हुआ लेकिन दूसरी तरफ चिली, व्हेनिनझुएला और कई अन्य देशों में लोकतंत्र के माध्यम से वामपंथी दल लगातार सत्तारूढ हैं। तो क्या समाजवाद इतिहास की बात हो चुका है?

एक समय श्रमिक वर्ग के वैश्विक श्रमिक संगठन (world federation) की सदस्य संख्या 7 करोड के ऊपर पहुंच गई थी।क्या वह यूही?

शासन: और कुछ आक्षेप

श्रमशक्ति का शोषण यह पूंजीवाद में विद्यमान मुख्य दोष बताया जाता है। लेकिन सोवियत रूस में होने वाला उत्पाद भी केवल उपयुक्तता की दृष्टि से नहीं होता था। वहाँ भी अतिरिक्त मूल्य तयार होता था। वहाँ की वेतन प्रणालियों में कम-अधिक अनुपात थे। निजी धन संचय करनेवाला, मुनाफा कमाने वाला वर्ग वहां भी उभरकर आया था। सत्ता के माध्यम से व्यक्तिगत हित साधने वाले लोग अस्तित्व में आए थे। विशेषाधिकारी वर्ग वहां था। अर्थात शोषण था ही।

फॅसिस्ट विरोधी मोर्चा खडा करने में, इंटरनैशनल संगठन असफल रहा था। रशिया युद्ध में शामिल होने तक तो, फासिस्ट फौजें एक के पीछे एक देश रौंदती जा रही थी, फिर भी रूस दर्शक बना रहा। इसी कारण फासिस्ट विरोधी युद्ध का नेतृत्व इंग्लैंड की ओर गया।

जागतिक क्रांति के स्थान पर एक ही देश में समाजवादी क्रांति का कार्य पूरा करने की नीति, रूसी नेतृत्व ने अपनाने के कारण, रूसी समाजवाद को राष्ट्रवाद का स्वरूप प्राप्त हुआ।

व्लादिमिर इलिच्च लेनिन

*लेनिन का जन्म 22 अप्रैल 1870 को, व्होल्गा नदी के किनारे बसे सिम्बिर्स्क में हुआ था।

*1887 में उनके बडे भाई अलेक्जेंडर उल्यानोव्ह को, झार अलेक्जेंडर तृतीय की हत्या के प्रयास के आरोप में फांसी दे दी गई थीं।

*1890में लेनिन रूस की तत्कालीन राजधानी सेंट पिट्सबर्ग में मार्क्सवादी गुट में शामिल हो गए।

*1895 में लेनिन गिरफ्तार कर साइबेरिया में निर्वासित कर दिए गए थे।

* 1900 में उन्हें रिहा कर दिया गया।

*नवंबर 1905-दिसम्बर 1907 इस दरम्यान को छोड कर वे 1917 तक अधिकतर निर्वासन में रहें।(रूस के बाहर)।

*रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी के लंदन सम्मेलन में लेनिन ने सफलता पूर्वक संघर्ष करके बोल्शेविक गुट बनाया। बाद में बोल्शेविक आंदोलन के अंतर्गत कठोर केंद्रवाद लागू किया।

* 1912 में प्रावदा पत्रिका की स्थापना की।

*1917 की अक्टूबर क्रान्ति का नेतृत्व किया और रूस में दुनिया का प्रथम कम्युनिस्ट राज्य कायम किया।

*'क्या करें?' इस प्रबंध के रूप में लेनिन के विचार प्रकाशित हुए। इसे लेनिन वाद का मूल और प्रमुख दस्तावेज माना जाता है।

*लेनिन ने पूंजीवाद के भीतर लगातार सुधारों के सोशल डेमोक्रेटिक रास्ते को अस्वीकार कर दिया और सर्वहारा अधिनायकत्व के विवादास्पद मार्क्सवादी सिद्धांत को पुनर्जीवित किया। वे इसे पूंजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण की आवश्यकता मानते थे।

*उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान 'हरावल पार्टी' का उनका सिद्धांत था। इसमें अति अनुशासनबद्ध और समर्पित मार्क्सवादी होंगे।

*लेनिन के आलोचकों को डर था कि ऐसा संगठन एककुलीन तंत्र और अंतत: एक व्यक्ति के शासन में परिवर्तित हो सकता है जो समाजवाद की संकल्पना से मेल नहीं खाएगा। आलोचकों में जनतंत्र को अपनाने वाले बेरेंस्टाईन थे, तो समाजवाद और जनतंत्र को अपनाने वाली लक्जेमबुर्ग भी थी। मेन्शेविक भी थे।

*लेनिन ने मजदूर - किसानों के जनवादी- अधिनायकवाद का सिध्दांत विकसित किया। मार्क्स को किसानों के क्रांतिकारत्व पर इतना विश्वास नहीं था।

*मार्क्स के समान लेनिन भी प्रतिनिधि पार्लमेंटरी जनतंत्र के आलोचक थे। लेकिन मार्क्स ने बहुमतवादी क्रांति की कल्पना की तो लेनिन ने श्रमिक जनता की ओरसे हरावल पार्टी द्वारा अल्पमत के क्रांति की। अपनी रचना 'वामपंथी कम्युनिज्म' ((1920) में उन्होंने सर्वहारा अधिनायकत्व के कार्य नीति का वर्णन किया।

जो वर्तमान राज्य के ढांचे का प्रयोग श्रमिकों के लिए अधिकतम फायदे प्राप्त करने के लिए करने की पैरवी कर रहे थे उनके विचारों को लेनिन ने घृणा और व्यंग से प्रेरित होकर 'संशोधनवाद' कहा।

*लेनिन के लिए सिद्धांत का महत्व, व्यवहार को उचित ठहराने में था।

*' राज्य और क्रांति ' इस राजनैतिक सिद्धांत को लेनिन का सबसे ठोस योगदान माना जाता है।

*मजदूर वर्ग के संघर्ष, साम्राज्यवाद विरोधी मुक्ती संग्राम के साथ एकाकार हो जाएंगे।-लेनिन।

* लेनिन ने 'मैटेरियालिज्म ॲण्ड इम्पेरियो क्रिटिसिझ्म' में द्वंद्वात्मक भौतिकवाद और ऐतिहासिक भौतिकवाद पर अपने विचार व्यक्त किए।

लेनिन के अनुसार कामगार क्रांति यह निर्यात करनेकी वस्तु नहीं है। उसे उस देश के श्रमिक वर्ग ने ही करना चाहिए।

*लेनिन की मृत्यु21-1-1924 को हुई।

जोसेफ विसारियो नोविच स्टालिन (छद्म नाम-कोबा)

*जन्म-21-12-1879- पिता जार्जिया के पशुपालक किसान लेकिन व्यवसाय से मोची थे। माँ एकातेरिना जार्जिएवना भूदास परिवार से थी।

*1922में, दसवीं कान्ग्रेस में स्टालिन कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव बने।

*रूस में स्टालिन का कार्यकाल, व्यक्तिमहात्म्य की अंतिम छोर तक वृद्धि, कठोर अधिनायकवाद तथा दमन के लिए जाना गया। इस कार्यकाल में सारे उदारपंथी और जनवादी रुझानों को समाप्त कर दिया गया। खेतों का बलात सामूहीकरण कर दिया गया। वास्तव में 1922 में ही लेनिन ने पार्टी की केंद्रीय समिति को लिखे गए पत्र में आगाह किया था, "साथी स्टालिन ने महासचिव बनने के बाद अपने हाथों में असीम सत्ता केंद्रित कर ली है और मुझे विश्वास नहीं कि वह इस सत्ता का हमेशा विवेक के साथ उपयोग कर सकेगा"। परिणामी अतिकेंद्रित सैनिक राज अस्तित्व में आया। इससे एक ओर तो राष्ट्र शक्तिशाली होकर खडा हुआ लेकिन दूसरी ओर, सुदूर भविष्य में कम्युनिस्ट आंदोलन या कहिए रूसी सर्वहारा क्रान्ति को नुकसान पहुंचा । रूस का विघटन हुआ। दोनों के लिए स्टालिन को ही उत्तरदायी माना जाना चाहिए?

*फिर भी स्टालिन का इतिहास में एक स्थान है। क्योंकि स्टालिन के नेतृत्व में ही रूसी लाल सेना द्वारा हिटलर पराभूत हो सका। मित्र देशों की सेनाओं में बर्लिन तक पहुंचने वाली केवल लाल सेना ही थी। अगर हिटलर पराजित नहीं होता, तो जो आंसू रूसी जनता के दमन के लिए बहाए जाते हैं, उन्हें पूरी दुनिया की जनता के लिए बहाने की नौबत आती।

5/6 मार्च 1953 के दिन स्टालिन की मृत्यु हो गई। इसके बाद निकिता ख्रुश्चेव शासक बने। उन्होंने लाखों लोगों की मौत के लिए स्टालिन को जिम्मेदार ठहराया।

मिखाइल गार्बाचेव्ह

*1986 में गार्बाचेव्ह सोवियत संघ के नेता बनकर आए। लेकिन तब तक सत्तर साल पुरानी साम्यवादी व्यवस्था विफल होती दिखने लगी थी। भविष्य को संवारने की दृष्टि से उन्होंने जो कार्यक्रम अंमल में लाने की कोशिश की उसमें दो शब्दों ने अपनी खास जगह बना ली थी।

पेरिस्त्रोइका- पुनर्गठन/मौलिक वैचारिक परिवर्तन/नवजागरण ।

ग्लासनोस्त- खुलापन।

जनता ने इसका उत्साह से स्वागत भी किया।

* गार्बाचेव्ह ने तनावमुक्त दुनिया का सपना देखा था। शीतयुद्ध की स्थिति को समाप्त किया।

*येल्तसिन और यानायेव को गॉर्बाचेव ही आगे लाए थे। लेकिन दोनों शक्तिशाली बने और गार्बाचेव्ह के शत्रु बन गए। एक ने उन्हें सैन्यबल से हटाने की कोशिश की तो दूसरे ने (येल्तसिन) उनकी कुर्सी पर कुटिलता से प्रत्यक्ष कब्जा कर लिया।

*गार्बाचेव्ह न सोवियत संघ का विघटन रोक सके, न साम्यवादी व्यवस्था को बचा सके। लेकिन उन्होंने अपनी हार को शालीनता के साथ स्वीकार किया।

*उनके त्याग पत्र के साथ सोविएत संघ के विघटन की प्रक्रिया 31-12-1991 को पूरी हुई। तो 1961में बनाई गई 87 मील लम्बी बर्लिन दीवार को गिराने के प्रसंग के साथ, दुनिया से साम्यवाद के बिदाई की घोषणा हो गई।

चीनी क्रांति

*चीन आधुनिक सभ्यता से या पश्चिमी सभ्यता से दूर एक देश था।

*1911 में सनयत्सेन ने राजशाही का अंत करके चीन के प्रथम गणतंत्र की स्थापना की।

*इधर सोवियत क्रांति और मार्क्सवाद के प्रभाव में आए लोगों ने एक जुलाई 1921

में शांगहाई में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी बनाई। पार्टी बनाने वाले, शुरू में माओ सहित तेरा नेता थे।

(माओ का जन्म छब्बीस दिसंबर 1893 को चीन के हेनान प्रांत के शाओशान में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था।)

*तीन सौ वर्षों तक सामंतवाद के प्रभाव में रहें चीन में किसान वर्ग सबसे बडा था। माओं ने शहरी श्रमिकों के स्थान पर किसानों को या ग्रामीण जनता को संगठित कर सैन्य शक्ति का निर्माण किया। जापान के चीन के प्रति आक्रामक रुख तथा अन्य कई कारणों से चीन के राष्ट्रवादी और कम्युनिस्ट पार्टी में कई बार सुलह होती रही और बीच-बीच में संघर्ष भी होते रहे।

*सनयत्सेन के बाद 1926 में चैंग-कै-शेक सत्ता में आए। उन्होंने1927 में कम्युनिस्टों पर बहुत बडा हमला कर दिया। कैंटन शहर में हजारों कार्यकर्ता मारें गए। 1934 में चैंग की सेना, कम्युनिस्टों पर हावी हो गई। अपने आप को बचाने के लिए

कम्युनिस्ट उत्तर की ओर चल पडे। इसमें एक लाख लोगों ने छह हजार मील की यात्रा की। इनमें से अंत तक केवल पैतीस हजार ही बच पाए।इसे महाअभियान(Long March) कहते हैं।

अंत में कम्युनिस्ट फौजों ने चैंग को 1949 में हरा दिया। वह ताइवान भाग गया। एक अक्टुबर 1949 को कम्युनिस्ट चीन अस्तित्व में आया।

कहा जाता है कि माओ की सबसे बडी उपलब्धि यह रही कि उसने रेत जैसे फैले राष्ट्र को अभेद्य कंक्रीट जैसे राष्ट्र में बदल दिया। दूसरी बात है कि उसने यूरोपीयन मार्क्सवाद को एशिया में लाकर उसे सफलता भी दिला दी। लेकिन उसके लिए श्रमिकों के स्थान पर किसानों को क्रांति का अगुवा बनाया। उनकी क्रांतिकारी भूमिका को मान्यता दिलवायी। किसानों पर माओ का यह विश्वास, मार्क्सवाद से बगावत थी या उसका विकास और विस्तार था इस पर विवाद होता रहा है च्यूंकि मार्क्स को किसानों की क्रांतिकारी भूमिका पर विश्वास नहीं था। माओं के अनुसार चीन में अंतर्विरोध पूंजीपति वर्ग और सामंतवाद में नहीं था तो वह किसान और भूस्वामीयों में था।

*तिसरी बात थी, माओ ने मार्क्सवाद को यहां के परिवेश में ढाला और उसे सत्ता तक पहुंचाया। लेकिन उनका मार्क्सवाद व्यवहारिक और राष्ट्रवाद से जुडा हुआ था।

*कम्युनिस्टों का शासन आने के बाद 1) बडे पूंजीवादी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।2) 1950 में भूमि सुधार लागू किए गए।इसके अंतर्गत सोलह वर्ष आयु के ऊपर के प्रत्येक व्यक्ति को न्यूनतम जमीन इस तरह दी गई कि पांच सदस्यों का कोई भी परिवार एक हेक्टर का मालिक हो।सोवियत रूस का अनुभव देखते हुए जमीनों का सामूहीकरण धीरे- धीरे किया गया।फिर भी उस का विरोध हुआ ही।खुदरा बाजार के विषय में भी यही हुआ।

*स्टालिन की मृत्यु के बाद अर्थात 1953 के बाद रूस में अधिनायकवाद में आई ढील के कारण माओ को भी उदारीकरण करना पडा। उन्होंने सरकारी काम सुधारने की दृष्टि से सूचनाओं का स्वागत किया। 'सैकडों तरह के फुल खिलने दो, सैकडों विचार पनपने दो।" यह नाम दिया गया इस अभियान को। लेकिन कट्टरपंथियों की आलोचना के कारण इसे रोक दिया गया।

*फिर 'लम्बी छलांग' और 'सांस्कृतिक क्रांति' के प्रयोग हुए। इसी वर्ष16-5-2016 को सांस्कृतिक क्रांति को पचास वर्ष पूरे हुए लेकिन उसे याद करने की आवश्यकता किसी को नहीं लगी चूंकि उसके साथ मनुष्य ने झेली हुई भयावह बातों की यादें जुडी हुई हैं। जब चीन की शक्ति माओ की पत्नी सहित चार लोगों के हाथों में आ गई थी तो उन्होंने सेना के बल पर और आतंकवाद के माध्यम से सांस्कृतिक क्रांति करनी चाही।–परिणामतः तेंग-सियाओ-पिंग की कुछ उदारवादी सरकार आयी। (तेंग को सां.क्रांति के दरम्यान पार्टी से निलंबित कर दिया गया था।)

*क्रांति के भविष्य तथा संक्रमणकालीन समाज के बारे में माओ ने अपने विचार 'न्यू डेमोक्रसी' (1940) में व्यक्त किए हैं।

*माओ के कुछ विचार-

सत्ता बंदूक की नली से आती है, उसके बल पर बनाए रखी जा सकती है।

#वे ख्रुश्रचेव की सहअस्तित्व की नीति से सहमत नहीं थे।

माओ के अनुसार छापामार युद्ध नीति, कम विकसित लोगों या समाज में अधिक प्रभावशाली होती है।

समाजवाद का रास्ता हिंसात्मक होगा।

माओ ने चलाएं कुछ आंदोलन-.

-भूस्वामी विरोधी अभियान (1949-52)

-प्रथम पंचवर्षीय योजना (1953-57)

-सैकडों फूल खिलने दो अभियान (1957)

-लम्बी छलांग। (1958-60)

.महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति (1966-76)

.लम्बी छलांग-लम्बी छलांग को समाजवाद से कम्युनिज्म में संक्रमण बताया गया। माओ ने इसे कम्युनिज्म का उद्देश प्राप्ति काल बताया।

.कम्यून को सर्वहारा अधिनायकत्व का माध्यम बताया।

लम्बी छलांग- ने प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान आरंभ की गई भारी औद्योगिक प्रक्रिया को बदल कर जनता के बीच उद्योग शुरू किए। प्रत्येक परिवार को उत्पादक बनाने के लिए राज्य की ओरसे पूंजी और स्रोत प्रदान किए गए। (लेकिन'परिवार इकाई की आलोचना की गई।) सामुदायिक व्यवस्था, कार्य और स्वामित्व के अलावा दूसरे क्षेत्रों पर भी लागू की गई। सामुदायिक जीवन का विचार प्रचारित किया गया। लेकिन जब उत्पादन में भारी गिरावट आई और अकाल का खतरा पैदा हुआ तो यह नीति छोड देनी पडी। सातवें दशक के मध्य "आंगन उद्योग' और'बरॅक कम्यून' समाप्त हो गए।" लम्बी छलांग" के दौरान नौकरशाही की भूमिका बढ गयी थी अतः वह सांस्कृतिक क्रांति के दौरान निशाना बनी। उन्होंने 1959 के ग्रीष्म में तुरंत कम्युनिज्म की ओर संक्रमण की बातें बंद कर दीं। स्वीकार किया गया कि परिवर्तन की प्रक्रिया लंबी होगी।

माओ स्टालिन के विचार के आलोचक थे कि सोवियत संघ में समाजवाद के विकास के दौरान अंतर्र्विरोध धीरे-धीरे समाप्त हो रहे थे। माओं के अनुसार समाजवादी समाज भी, उत्पादक शक्तियों तथा उत्पादन संबंधों के बीच टकराव से ही विकसित होता है। चूंकि अलग- अलग व्यक्ति, भिन्न-भिन्न परिस्थितियां प्रतिबिंबित करते हैं। इसलिए इससे जनता के बीच अंतरविरोध विकसित होते हैं। इस कारण कम्युनिस्ट समाज में भी हर कोई संपूर्ण नहीं होता। उत्पादक शक्तियां लगातार विकसित होती रहेंगी। समाज के सदस्यों में टकराव होता रहेगा। लेकिन अंत में उत्पादक शक्तियों के विकास तथा उसके अनुरूप व्यक्ति का ढलना वर्गसंघर्ष का स्थान लेगा और फिर निरंतर क्रांतियों का सिलसिला समाप्त हो जाएगा। इन विचारों ने उन्हें रूसी कम्युनिस्टों से अलग पहचान दी।

समाजवादी बाजार अर्थ व्यवस्था (चीनी)

अपनी समाजवादी अर्थव्यवस्था को संभालने के लिए चीन ऐसी बातों का सहारा ले रहा है जो पारंपरिक दृष्टि से पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की मानीं जाती हैं। जो प्रयोग चीन में हो रहे हैं उन्हें उसने' समाजवादी बाजार अर्थव्यवस्था ' नाम दिया है। तीन दशक पहले सुधारों की शुरुआत करते हुए देंगजिआओपिंग ने इसे ' राज्य पूंजीवादी या 'चीनी चरित्र वाला समाजवाद' नाम दिया था।

शुरू में चीन ने (1979) में विदेशी कंपनियों को संयुक्त उद्यमों में निवेश के लिए बुलाया था तो कई निर्बंध लगाएँ थे जो समाजवादी लक्ष्यों के अनुरूप ही थे। सरकार, स्वामित्व की दृष्टि से अपना प्रभुत्व छोडना नहीं चाहती थी। घरेलू मुनाफे को आसानी से विदेशी मुद्रा में नहीं बदला जा सकता था। चीनी सरकार ने 'विशेषआर्थिक क्षेत्रों' में बुनियादी ढांचा खडा करने, 1980 के दशक में, अरबों यूनान झोंके लेकिन कोई विशेष विदेशी निवेश नहीं हुआ।

लेकिन इन कडे कानूनों में जब ढील दी जाने लगी और मुक्त बाजार के लक्षण एक-एक कर प्रकट होने लगे तो इससे विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। 1987 में वह मात्र 2.3 अरब डॉलर था जो 1996 में 38 अरब डॉलर तक पहुंच गया। सकल घरेलू उत्पाद और निर्यात में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। इससे देशी- विदेशी पूंजीपतियों का एक छोटा तबका रातोंरात मालामाल हो गया। अर्थात आर्थिक विकास का असमान वितरण। पश्चिमी उपभोक्तावादी मूल्य आज पूरी तरह चीनी युवा पीढी पर छाते जा

रहे हैं। दूसरी ओर गरीब तबके का अस्तित्व पूरी तरह समाप्त नहीं हो गया है। आज चीन की कम्युनिस्ट पार्टी 100 खरब डॉलर्स की अर्थ व्यवस्था संभाल रही है। साथमें चीनी माफिया दूनिया का सबसे शक्तिशाली माफिया माना जाता है।

लोकतांत्रिक समाजवाद

*आज समाजवाद की विचारधारा को थामे रखने का काम यही धारा कर रही है। रूसी क्रांति तक सभी वामपंथी चिंतक इसी धारा के अंतर्गत एकजुट थे। रूस में कम्युनिस्ट शासन और पर्याय से कम्युनिस्ट विचारधारा के पतन के बाद भी केवल यही चिंतन धारा अपना अस्तित्व सक्रिय रूप से बनाए हुए हैं। आज भी यह यूरोप, लैटिन अमेरिका के कई देशों में सत्ता में आती रहती है या उसकी हिस्सेदारी रहती है। सोवियत संघ के विघटन के बाद यूरोप के कई देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों ने अपने को सोशल डेमोक्रेट के रूप में बदल लिया है। अतः इस विचारधारा का अलग महत्व है।

*सोशलिस्ट इंटरनेशनल दुनिया के सभी वामपंथीयों का संगठन था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रूसी नेताओं ने यह आग्रह किया कि श्रमिक आंदोलन के हित में सभी वामपंथी संगठन अपने-अपने देश के युद्ध प्रयासों का विरोध करें। लेकिन दुनिया की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टीयों ने इस सुझाव को नहीं माना क्योंकि यह उनका अपने-अपने देश के साथ विश्वासघात होता। परिणामतः लेनिन ने अपनी पार्टी को साझा मंच से अलग कर लिया और उसे कम्युनिस्ट पार्टी का नाम दे दिया। आगे दोनों धाराओं में लगभग शत्रुता का संबंध बन गया।

दोनों में प्रमुख अंतर यह था कि सोशल डेमोक्रेट, विकासवाद में विश्वास रखते थे तो मार्क्सवादी क्रांति में। सोशल डेमोक्रेट सार्वत्रिक मतदान के माध्यम से, बहुमत सम्मत शासन द्वारा अपनी ध्येयपूर्ति चाहते थे तो मार्क्सवादी क्रांति के बाद अधिनायकवादी शासन तंत्र के माध्यम से।

सोशल डेमोक्रेटिक वर्कर्स पार्टी

इसकी स्थापना में सबसे अगुवा थे विल्हेम लिबनेक (जर्मनी:1826-1900) तथा अगस्तू बेबेल (1840-1913)। यह उन्नीसवीं सदी के अंत तक जर्मनी में बहुत ही मजबूत श्रमिक पार्टी बन गई थी।

*फार्डनेंड लासाले (1825-1864)

जर्मन समाजवाद के विकास में यह महत्वपूर्ण व्यक्तित्व बनकर ऊभरे। इनके विचार- राष्ट्रीय राज्य का सामाजिक जनवादी सुधारवाद।

*श्रमिक वर्ग के दबाव के कारण उदार हस्तक्षेपकारी राज्य एक कल्याणकारी राज्य में बदल जाएगा। वह मानवता की महान संस्कृति बनाने का मिशन पूरा करेगा। (एक मार्च 1863)

*लासाले सार्वत्रिक, प्रत्यक्ष, गुप्त और वयस्क मतदान के पक्ष में थे।

*अगस्त1864में वे जिनीवा में मारे गए।

*दूसरी ओर बेबेल और लिबनेक का विचार-

*कुलीन तंत्र तथा निरंकुशता के विरुद्ध मध्यमवर्ग के प्रगतिशील तत्वों का समर्थन किया जाए। यही विचार मार्क्स तथा एंगेल्स का भी था। लेकिन-

*आगस्तु बेबेल (1840-1913) जर्मन समाजवादी सिद्धांतकार-

मार्क्स के विपरीत बेबेल का मानना था कि पूंजीवाद से समाजवाद में परिवर्तन पार्लमेंटरी तरीके से होगा, न कि क्रांति द्वारा।

समाजवादी विचारों में, बेबेल का सबसे महत्वपूर्ण योगदान, नारी प्रश्न का उनके द्वारा किया गया गहन और सूक्ष्म विश्लेषण है। उनकी किताब 'वूमन इन द पास्ट, प्रेजेंट ॲण्ड फ्यूचर'(1883) है।

कार्ल काऊत्स्की(1854)

1881 से उन्होंने अपनी शक्ति जर्मन सोशल डेमोक्रेसी की सेवा में लगाई। 1881में ही वे लंदन पहुंचे। अगले पांच साल तक वे एंगेल्स के सहयोगी रहे। 1899 से 1914 तक वे द्वितीय इंटरनैशनल के प्रमुख सिद्धांतकार रहे। 1914 में एस्.पी.डी. के 10 लाख से भी ज्यादा सदस्य थे। 1912 में जर्मन पार्टी को. 34.2% वोट मिले। लेकिन उसे सत्ता में नहीं आने दिया गया।

*काऊत्स्की ने शुरू में रूसी विद्रोह का समर्थन किया। लेकिन जैसे-जैसे अधिनायकवाद हावी होता गया, उसकी वे आलोचना करने लगे और पार्लमेंटरी जनतंत्र का समर्थन किया तो वे लेनिन के रोष के पात्र हो गये। उन्हें गद्दार कहा गया।

काऊत्स्की के विचार-

*समाजवाद केवल जनतांत्रिक रास्ते से ही आ सकता है। उनके लिए जनतंत्र का अर्थ था बहुमत का शासन, नागरिक अधिकार और अल्पसंख्यकों के लिए संरक्षण। समाजवाद बहुमत द्वारा सर्वमान्य कारवाई होनी चाहिए। उसमें अल्पमत के तथा विरोधी मत के प्रति सम्मान होना चाहिए। बिना मताधिकार, किसी भी व्यवस्था में बहुमतवाद नही आ सकता।

*काऊत्स्की ने जनसमर्थन से समाजवादियों द्धारा पार्लमेंटरी बहुमत हासिल करके समाजवादी परिवर्तन की कल्पना की। वे मानते थे कि मजदूर वर्ग का आगे बडा बहुमत हो जाएगा। उसे हराना असंभव हो जाएगा और फिर किसी और वर्ग के साथ समझौता करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी। उनकी दृष्टि में सर्वहारा क्रान्ति निरंकुश शासन का अंत करके पार्लमेंटरी व्यवस्था की शुरुआत कर सकती है।

*उन्होंने अपनी रचना The Dictatorship of proletariat में बोल्शेविक पर सीधा हमला बोला। उन्होंने इस सत्ता के लिए 'बरैक समाजवाद' शब्द का प्रयोग किया। उनकी एक और रचना थी - Terrorism and Communism (1918)|

*काऊत्स्की के अनुसार समाजवाद अपने में एक उद्देश्य नहीं है। उद्देश्य है सभी तरह के शोषण और दमन की समाप्ति।

*क्रांतिकारी अल्पमत द्वारा लादा गया समाजवाद अपने आपमें विरोधाभासी है। निरंकुशता तथा ताकत के बल पर थोपा गया समाजवाद सिर्फ आतंकराज ही कायम करेगा। यह समाजवाद, समाज का नौकरशाहीकरण तथा फौजीकरण करेगा और अंतमे एक व्यक्ति के शासन का रूप धारण करेगा। यह प्रयत्न अपरिपक्व होगा।

*समाजवाद या लोकतंत्र इनमें से एक का चयन करना नहीं है तो दोनों का संगलन करना है चूंकि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों में से एक का चयन, यह कल्पना ही भ्रामक है। बिना जनतंत्र के समाजवाद नहीं हो सकता। आधुनिक समाजवाद से हमारा अर्थ केवल उत्पादन का सामाजिक स्वरूप नहीं है।

*काऊत्स्की वास्तव में शुरू में मार्क्स- एंगेल्स के करीबी मित्र थे और जर्मन सोशलिस्ट पार्टी के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता। उन्हें मार्क्स- एंगेल्स का प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी माना जाता था और उन्हें 'मार्क्सवाद का पोप' कहा जाता था। उनके सामने लेनिन, स्टालिन, ट्राट्स्की आदि छोटे व्यक्तित्व थे। वे सो.डे.पार्टी की पत्रिका ' डायन्वाय' के तीस वर्ष तक संपादक रहे ।1891में एंर्फूत कांग्रेस में जर्मन पार्टी ने एक कार्यक्रम स्वीकृत किया था। कार्यक्रम दो भागों में विभाजित था। एक भाग था-सिद्धांत- इसे तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका काऊत्स्की की थी। दूसरा भाग था-कार्ययोजना-इसे अधिकांश बेरेंस्टाईन ने तैयार किया था। बेरेंस्टाईन काऊत्स्की के गुरु थे।

संशोधनवाद:एडुअर्ड बेरेंस्टाईन (6-1-1850/18-12-1932)

इनका जन्म बर्लिन में एक यहूदी परिवार में हुआ था। वे आयु के 22वे वर्ष में ही जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी में शामिल हो गए। लेकिन 1878 से 20 वर्ष उन्हें निर्वासन में गुजारने पडे। लंदन वास्तव्य के दौरान उन्होंने मार्क्सवाद में संशोधन का प्रयत्न किया और अपनी प्रसिद्ध किताब The English civil War Of The Twentyth Century प्रकाशित की। लेकिन उन्हें 44 साल बिताने के बाद पार्टी छोडनी पडी।

मार्क्स जिंदा थे उस समय भी उनका खुला विरोध करने वाले अराजकतावादियों को छोड दिया तो समाजवादी धारा में मार्क्स के विचारों को अपूर्ण कहने की हिम्मत किसीने नहीं की। इसके लिए एक अपवाद थे बेरेंस्टाईन-

उन्होंने कहा कि मार्क्स हर युग में पैदा नहीं होते। आज का मजदूर आंदोलन इतना महान होने पर भी उनके बराबर की प्रतिभा वाला कोई और व्यक्ति उनका स्थान नहीं ले सकता। समाजवाद को कल्पनालोक से निकालकर सामाजिक वास्तवता के ठोस आधार पर खडा करके मार्क्सवाद ने श्रमिक आंदोलन को सबसे बडी प्रेरणा दी है। मार्क्स असाधारण रूप से महान है। फिर भी-

"मेरे विचार मार्क्स के विचारों से भिन्न है। मार्क्स के विचार कुछ बातों के संदर्भ में ठीक नहीं है। समय के साथ स्थितियां बदल रही हैं अतः नई सोच आवश्यक है। कई मार्क्सवादी विचार पुराने पड चुके हैं। समाजवाद को औद्योगिक पूंजीवाद के अनुरूप ढालना आवश्यक है।"

*समाजवाद कभी समाप्त नहीं होने वाला उद्देश्य है। विश्व न कभी समाप्त होता है, न कभी संपूर्ण।

*हिंसा पूरी तरह बर्बर है। समाजवाद को हर तरह की तानाशाही और षडयंत्रों को त्याग कर जनतंत्र के साथ धीरे-धीरे आगे बढना होगा।

*जनतांत्रिक और पार्लमेंटरी किस्म का समाजवाद 'संशोधनवाद' का आधार था।

*सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने पूंजीवाद के लचीलेपन को और समय के साथ अपने में परिवर्तन करने की उसकी क्षमता को पहचान लिया था। उनके अनुसार पूंजीवाद बढते धन के जरिए स्थाई होता जा रहा है। मार्क्स का यह दावा था कि मध्यम वर्ग लुप्त हो जाएगा। संपत्ति के मालिकों की संख्या घटती जाएगी। गरीबी बढती जाएगी। बेरेंस्टाईन ने दिखाया कि स्थिति इससे उलटी होती जा रही है। मध्यम वर्ग चरित्र बदल रहा है। उसके लुप्त होने के स्थान पर उसमें नई-नई श्रेणियां शामिल हो रही हैं। आधुनिक पूंजीवाद, वर्गसंबध को सरलीकृत नहीं कर रहा है बल्कि उसमें असंख्य स्तर उत्पन्न कर रहा है।

*बेरेंस्टाईन ने काऊत्स्की के इस आशावादी विचार को भी अमान्य किया कि भविष्य में श्रमिक वर्ग अपने भारी बहुमत के कारण अपराजेय राजनीतिक शक्ति होगी। जनसंख्या का अधिकतर हिस्सा न पूंजीपति था न सर्वहारा। धन का विस्तार और फैलाव हो रहा था। अतः श्रमिकों में क्रांतिकारी चेतना धीमी पड रही थीं। अतः समाजवाद, सामाजिक सुधार की धीमी गति द्वारा ही विकसित होगा (लासाले का सुधारवाद)

*बेरेंस्टाईन के अनुसार 'समानता' समाजवाद का केंद्र है। अतः सम्पत्ति का बटवारा सामाजिक विधान के माध्यम से होना चाहिए।

महत्वपूर्ण योगदान-

एंर्फूत कार्यक्रमः (इसका उल्लेख पहले हो चुका है) जर्मन पार्टी ने 1891में स्वीकृत किया था।

इस कार्यक्रम ने मार्क्सवाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई। लेकिन व्यवहार में वह पार्लमेंटरी गतिविधियों की ओर अधिक आकर्षित होता गया।

इस कार्यक्रम का दूसरा और व्यवहारिक हिस्सा बेरेंस्टाईन ने तैयार किया था। इसमें श्रमिक वर्ग की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को सुधारने में वर्तमान राज्य के प्रयोग पर जोर दिया गया था। इसमें-

सार्वत्रिक मताधिकार, स्त्रियों के लिए समान अधिकार, समानुपातिक प्रतिनिधित्व, विचारों की स्वतंत्रता, संगठन की स्वतंत्रता, मुफ्त स्कूली शिक्षा, स्कूलों का धर्मनिरपेक्षीकरण, मुफ्त कानूनी सहायता, स्वास्थ्य संबंधित सहायता, स्थानीय आत्मशासन प्रस्तावित करने या इन्कार करने के तरीकों से प्रत्यक्ष विधान का निर्माण, न्यायाधीशों का चुनाव, आठ घंटों का कार्यदिवस, जहां तक हो सके स्त्रियों और बच्चों के श्रम पर प्रतिबंध आदि बातें शामिल थीं। इनमें ऐसी कौनसी बातें नहीं हैं जिन्हें आज कल्याणकारी राज्य की संकल्पना में अंतर्भूत किया गया है। 1891में मजदूर सुरक्षा ॲक्टने इंपीरियल इंडस्ट्रीयल ॲक्ट का स्थान लिया। इसमें उपरोक्त बातों से कई बातें ली गई थीं।

*उन्होंने राज्य के लुप्त होने के सिद्धान्त को भी अमान्य कर दिया।

*उन्होंने ही स्वयं अपने विचारों को "संशोधनवाद" नाम दिया और अपनी रचना Evolutionary Socialism नाम से प्रकाशित की।

*संशोधनवाद के दो प्रमुख मूल्य है-समाजवाद और जनतंत्र। बोल्शेविकों का विरोध किया। (वैसे लेनिन ने भी संस्कृति की कमी को बोल्शेविक सत्ता की त्रुटि बताया था।)| इस संप्रदाय में पैदा हुए अन्य विचारक–कुर्त किस्नर, ज्यॉर्ज वोल्मर ,गुस्ताख,इग्नाज |

'एंटोनियो ग्राम्शी-इटली (1891-27एप्रील1937)

*गरीब परिवार में पैदा हुए। युवा-वस्था में लम्बी बीमारी के कारण कुबडे हुए थे।

*1918में इटली के ट्रेड युनियनों की सदस्य संख्या बीस लाख तक पहुंच गई थी।

*ग्राम्शी इटालियन कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक और बडे नेता बन गए। लेकिन फासिस्ट इटली में उन्हें इक्कीस वर्ष और चार महीने की सजा हुई।

*इटली में अपेक्षित समाजवादी क्रान्ति के स्थान पर 1922 में मुसोलिनी के नेतृत्व में फॅसिझम सत्ता में आ गया। उन्होंने जेल में3000पृष्ठों का लेखन किया।

*ग्राम्शी के अनुसार रूस में मिली सफलता के फलस्वरूप बोल्शेविकों की सोच' मृत सिद्धांतों 'में बदल गई।

फिर भी असंख्य कठिनाइयों और बलिदानों के बावजूद वे मानव स्वतंत्रता, सम्मान, सच्चे जनवाद और समाजवाद के प्रति समर्पित रहे।

इंग्लैंड का फेबियन समाजवाद

*1884 में फेबियन सोसाइटी की स्थापना हुई जिसमें लंदन के बुद्धिजीवी शामिल हुए। इंग्लैंड में सोशल डेमोक्रेटिक विचारधारा का प्रचार और प्रसार फेबियन सोसायटी ने किया। वे जनतांत्रिक तरीकों के प्रति समर्पित थे। चिंतकों में वेब, शाम, वेल्स जैसे लोग थे। फेबियनों ने अपने नाम को रोमन जनरल फाबियस कंकटेटर से लिया। फाबियस कंकटेटर गनिमी ढंग की लडाई लढता था।

* सोसायटी ने कई नागरिक समस्याओं पर विचार किया ।इसी कारण ग्रीनलीफ ने इसे 'Institute for social engineering 'कहा। ओकशॉट, फेबियनों' को 'निर्देशित समाजवाद' के प्रतिपादक मानते थे। सोसायटी नागरिक सेवा में विस्तृत सुधारों पर जोर देती थी। इस कारण इसे “गॅस और पानी का समाजवाद” भी कहा गया।

*फेबियन समाजवाद की विसंगतियां - अंत में इसने साम्राज्यवाद तक का बचाव किया।शॉ, नित्शे और मुसोलिनी के प्रशंसक बने।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद

1950 के दशक में पश्चिम यूरोप के अधिकांश क्षेत्रों में असाधारण दर से विकास हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि पूर्ण रोजगार, आर्थिक संरक्षण और संपन्नता पैदा हुई। यह श्रमिकों तक भी पहुंची। वेतनभोगी मॅनेजरों का एक वर्ग विकसित हुआ। अर्थात पूंजी का स्वामीत्व और नियंत्रण इनके बीच अलगाव उत्पन्न हुआ। इससे मालिक-प्रबंधन का एकाधिकार जाता रहा।

आवश्यकता से अधिक, राज्य के नियंत्रण का परिणाम हुआ नौकरशाहीकरण| इसका नतीजा लालफिताशाही और बरबादी के रूप में सामने आया। अक्षमता, ठहराव, निष्क्रियता अर्थात हानिकारक परिणाम।

अर्थात एक तरफ नए दक्षिणपंथी मांग करने लगे कि राज्य का नियंत्रण हटे, अर्थतंत्र का उदारीकरण हो और मुक्त बाजार हो।

तो दूसरी ओर श्रमिकों की ट्रेड यूनियनें भी इतनी सशक्त हो चुकी थीं कि अपने लिए अधिकतम हिस्से की मांग परिणामकारक ढंग से कर सके। इनसे पूंजी और श्रम के बीच के टकराव उग्र हुए।

केंसवाद-कल्याणकारी पूंजीवाद

तो केंसवाद ने उत्पादकता के तरीकों के निजी स्वामित्व और अर्थतंत्र पर जनतांत्रिक नियंत्रण की गारंटी देने का दावा किया। केंसवाद, आय तथा धन का प्रसार, व्यापक उपभोग आधार और आर्थिक प्रसार के माध्यम से समानता निर्मिती का पक्षधर था। इसने कल्याणकारी पूंजीवाद की आधारशिला रखी। अर्थात मुनाफा और साथ-साथ सामाजिक सुरक्षा की योजनाएँ।

ऐसी स्थिति में और कई घटनाओं के मेलजोल से क्लासिकीय समाजवाद के विचार के स्थान पर गैर श्रमिक वर्ग्गीय समाजवाद के विचार उभरे।

युद्धोत्तर समय में सोशल डेमोक्रेसी के सामने मुख्य विषय थे-

1) उत्पादन के साधनों का सामाजिकरण। इसे पूंजीवाद और कम्युनिज्म के बीच का एक तिसरा रास्ता माना गया ।इसमें समुदाय के पास, बिना सोवियत ढंग के कठोर केंद्रीकरण के, आर्थिक शक्ति होगी। राज्य का काम होगा नियोजन और समन्वय। यह विकेंद्रिकृत नियंत्रण होगा। इसमें श्रमिकों की हिस्सेदारी और निजी उद्यमों का योगदान होगा।

2) नियोजन

अ) ब्रिटिश लेबर पार्टी की दृष्टि से नियोजित आर्थिक विकास का अर्थ था पूर्ण रोजगार और उच्च जीवन स्तर। राज्य का काम होगा मुख्य उद्योगों, सेवाओं, वित्तीय संस्थाओं की नीतियों का निर्देशन करना।

आ) सोशलिस्ट पार्टी ऑफ आस्ट्रिया की दृष्टि में नियोजन का अर्थ होगा संकट से मुक्त अर्थ तंत्र का विकास। उसमें उत्पादन के साधनों के किसी सामाजिकीरण या नियोजन के अंतर्भाव के स्थान पर राष्ट्रीय उत्पादकता बढाकर आर्थिक संरक्षण की बात थी।

3) सामाजिक नागरिकता और बराबरी:

राजनैतिक समानता के उदार सिद्धांतों को 'सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों' में लागू करना।

1959 में बाऊ गोडेसबर्ग सम्मेलन में स्वीकार किए गए कार्यक्रम में राजनैतिक उदारवाद, मिश्रित अर्थ व्यवस्था, कल्याणकारी राज्य, केंसवाद तथा समानता की नीतियों को अंतर्भूत कि गया था।

जर्मनी के अलावा सो.डे.का प्रभाव आस्ट्रिया, बेल्जियम, नीदरलैंड और स्वीडन में भी था।

यूरो कम्युनिज्म

यह द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अस्तित्व में आया। यह शब्द ऐरिको बर्लिंगर द्वारा सर्वप्रथम प्रयुक्त किया गया। पश्चिम यूरोप का आधुनिक कम्युनिज्म जिन बातों के प्रति प्रतिबद्ध है, उनमें पारंपरिक मानवाधिकार, मनुष्य की स्वतंत्रता के लिए सम्मान, जनता का कल्याण तथा विकास ये बातें प्रमुख हैं। वास्तव में शुरू में इसके साथ यूरोप की तीन पार्टीयॉ जुडी थी-स्पेन, इटली, फान्स। साथमें जापान और आस्ट्रेलिया की कम्युनिस्ट पार्टियाँ भी थी।

इसने जनतांत्रिक तरीकों से समाजवाद तक पहुंचने के रास्ते खोजने की कोशिश की, मानवाधिकारों पर जोर दिया। संवैधानिक कानूनी दायरे में परिवर्तन चाहे। अर्थात इसने कभी पूंजीवादी लोकतंत्र को समर्थन नहीं दिया।

इटालियन लोगों में मुसोलिनी शासन की यादें ताजा थी। अतः वे किसी भी ढंग का अधिनायकवाद नहीं चाहते थे। अतः ई 1944-46 में ही प्रगतिशील जनतंत्र का विचार इटालियन कम्युनिस्ट पार्टी में केंद्रीय व्यक्तित्व पाल्मोरा टोलियाती द्वारा विकसित किया गया।

यूरो कम्युनिज्म की शुरुआत 1956 में मानी जा सकती है। 1976में फ्रांस की कम्युनिस्ट पार्टी ने भी सर्वहारा अधिनायकत्व को कालबाह्य माना। इसमें प्रमुख भूमिका हट्वदाद की थी। स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी ने भी 1977 में सेंटियागो कैरियो के नेतृत्व में यही रास्ता पकडा। उनके अनुसार सर्वहारा अधिनायकत्व रूस के लिए आवश्यक था। वहाँ किसानों की तुलना में सर्वहारा अल्पमत में था। लेकिन पश्चिम यूरोप में सर्वहारा की भारी संख्या, शासन द्वारा किए जा रहे कल्याणकारी कदमों की स्थिति में विद्यमान राज्य मशीनरी को विघटित करने की आवश्यकता नहीं है।

अराजकतावाद या अराज्यवाद

* 'अराज्यवाद' यह अंग्रेजी के 'अनार्किझम' इस शब्द के लिए प्रतिशब्द के रूप में उपयोग में लाया गया शब्द है। अराजकतावाद का अर्थ है, जिस विचारधारा में यह माना जाता है कि ऐसी समाज व्यवस्था की निर्मिति करनी चाहिए, जिसमें राज्यसंस्था जैसी कोई संस्था नहीं होगी। वह यह भी मानती है, ऐसी निर्मिती संभव है। तभी यह समाज व्यवस्थित हो सकेगा।

*राज्य संस्था के अस्तित्व के संस्कार हमारे मन पर इतनी गहराई तक है कि उसके बिना अस्तित्व की हम कल्पना ही नहीं कर सकते।

अराजकतावादी तर्क-

*कोई भी राज्य संस्था-फिर वह श्रमिकों की ही क्यों न हो-व्यक्ति पर विधि-निषेधात्मक-नियंत्रण - दंड थोपें बिना नहीं रह सकती।

*ऐसी संस्था पर समाज के शक्तिशाली तबके का नियंत्रण होता है। यह तबका अल्पमत में होता है और मानवी स्वभाव के अनुसार वह बहुमत का शोषण किए बिना नहीं रह सकता। यही बहुसंख्य जनता के दु:खों का कारण है।

*जिसकी जितनी क्षमता है उसने उतनी समाज की सेवा करनी चाहिए। साथ में जिसकी जितनी आवश्यकताएं है उनकी पूर्ति समाज करेगा। यह समाज में समता का स्वरूप होगा। वितरण में कोई पूर्व शर्तें या पक्षपात नहीं होना चाहिये। अन्यथा जनता में अविश्वास बना रहेगा और कोई बदल नहीं होगा।

*अराज्यवादी आमतौर पर मानते हैं कि होने वाला परिवर्तन रातों-रात नहीं होता। प्रकृति और मनुष्य जीवन में भी यह धीरे-धीरे ही होता है। इसीलिए अधिकतर चिंतक यह स्वीकार करते हैं कि परिवर्तन के समय न्यूनतम खून खराबा होना चाहिए।

*केंद्रीकृत उत्पादन को हतोत्साहित करना होगा। उसके स्थान पर छोटे-छोटे भूप्रदेशोंको स्वयंपूर्ण करना|

*पदार्थों की उत्पादन प्रायिकताओं का पुनर्निर्धारण करना होगा और इस गडबडी को दुरुस्त करके तबतक कायम रखना होगा जबतक कि प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती। इसके लिए उत्पादन और वितरण पर सामाजिक नियंत्रण हो।

*मनुष्य अपनी मर्जी से जीने के लिए मुक्त हो। अनुशासन और व्यक्तिस्वातंत्र एक दूसरे के विरोधी नहीं है। क्रांति के बाद श्रम की सख्ती या श्रम के प्रति प्रलोभन देना भी अनावश्यक है। यह भावना मनुष्य में स्वाभाविक होती है कि अपने श्रम से या कुशलता से कुछ नये का निर्माण किया जाए। शर्त है कि उसे वह काम करने में संतोष मिले, वह उबाऊ न लगे। वैसा माहौल पैदा करने की आवश्यकता है। आज समस्या है, ऐसे माहौल के अभाव की। यह विकृत व्यवस्था का परिणाम है।

*संगठन में भी लोकतंत्र का होना अनिवार्य शर्त है।

अराज्यवादी गेरार्ड विन्स्टेन्स्ले (17 वीं सदी--इंग्लैंड)

*जन्म10-10-1609 विगान, लंकाशायर।

*इन्हें आधुनिक अराजकतावाद का जन्मदाता माना जाता है।

*शुरुआती रचनाओं में उन्होंने ऐसे कम्युनिस्ट समाज का समर्थन किया जिसमें राज्य, सेना, और कानून नहीं होगे।

*साथ-साथ उन्होंने संस्थाकृत धर्म को भी अन्याय पूर्ण व्यवस्था बनाए रखने का हथियार माना। उनके अनुसार सच्चे धर्म का अर्थ भावी स्वर्ग की आराधना नहीं बल्कि शोषितों की मुक्ति है।

*उनके अनुसार जबतक निजी संपत्ति है तबतक मनुष्य का मनुष्य द्वारा शोषण जारी रहेगा। निजी संपत्ति या विशेषाधिकार को ईश्वर की देन मानना मूर्खता या पाखंड है।

*आपने सामुदायिक समाज संगठन का आधार आर्थिक बराबरी बताया और ऐसा न होने को क्रांति का कारण बताया लेकिन हिंसा रूप क्रांति का समर्थन नहीं किया। जनवाद का आधार भाईचारे को बताया।

*डिगर्स नाम का जो एक प्रयोग हुआ था उसके वे एक जानेमाने नेता थे।

*शिक्षा वैज्ञानिक, बराबर और सार्वजनिक हो।

*उनके समाज संगठन में हरकोई अपनी योग्यता के अनुसार योगदान देगा और आवश्यकता के अनुसार पाएगा।

*The law of freedom in a platform: true majesty restored (1652) को साम्यवादी समुदाय के संविधान का मसौदा माना जाता है।

*लेकिन उनका भी यूटोपियन वाद ही था। फिर भी अराजकतावादी समाज के आदर्श प्रस्तुत करने वाले वे सर्वप्रथम व्यक्ति थे।

विलियम्स गॉडविन (1756-1836)

क्रोपाटकिन ने इन्हें अराजकतावाद के राजनीतिक तथा आर्थिक विचारों को सबसे स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने वाला पहला व्यक्ति बताया। उनके अनुसार क्रांति यां समाज को दो शत्रु खेमों में विभक्त कर देती है और दोनों खेमों में तर्कहीन भावनाएं उत्पन्न कर देती है। ये भावनाएं विचार और उनको प्रकट करने की स्वतंत्रता के लिए घातक होती हैं।

*लेकिन वे धीरे-धीरे परिवर्तन के समर्थक थे।

*मनुष्य को संपूर्ण बनाया जा सकता है चूंकि वह लगातार सुधारों के लिए संवेदनशील है।

माइकल बाकुनिन (1814-76रूस)

*इनका पूरा नाम माइकल या मिखाइल अलेक्सांद्राविच बाकुनिन था।

*बाकुनिन को मनुष्य की मूल अच्छाई पर भरोसा था। सभी के लिए सौजन्य के साथ, प्रेमाचार के साथ और शांति के साथ जीना संभव है। ये गुण मनुष्य में शिक्षा से विकसित किए जा सकते हैं। अपराध करना यह मनुष्य का स्वभाव होता तो प्रत्येक मनुष्य के पीछे एक सिपाही लगाना पडता और ये सिपाही भी किसी और दुनिया से लाने पडते।

*जन्म-18-5-1814 को हुआ। वे एक धनी भूस्वामी के पुत्र थे। लेकिन उनके क्रांतिकारी विचारों और गतिविधियों के कारण उन्हें जीवन का बडा हिस्सा कई देशों की जेलों में काटना पडा। वे एक देश से दूसरे देश में निर्वासित होते रहे। उनके अन्तिम दिन बहुत ही बडे आर्थिक संकट और कठिनाई में गुजरे।

*अपने मतों के कारण उनका मार्क्स के साथ घोर विरोध होता रहा।

*लेकिन उन्हें आधुनिक अराजकतावाद या चरम वामपंथी कम्युनिज्म का अत्यंत महत्वपूर्ण नेता, व्याख्याता माना जाता है।

*एक जुलाई1876 को बर्न में उनका देहांत हो गया।

प्रिन्स क्रोपाटकिन (अराज्यवादी)

*इस व्यक्ति का जन्म बारह दिसंबर 1842 को रूस के अत्यंत प्राचीन और उच्च राजवंश में हुआ था।

*लेकिन उन्होंने अपनी सारी जागीरों को ठुकराकर, वंचितों के लिए काम करने के और भूमिगत क्रांतिकारी के अत्यंत कठोर जीवन को अपनाया। मामूली ढंग से जीवनयापन करते रहें और जेल आदि की भारी यातनाएं झेलीं।

*वे क्रांतिकारी ही नहीं तो महान गणितज्ञ, भूगर्भ विद्या तथा प्राणी जगत के विशेषज्ञ थे।

*रूसी क्रांति के बाद बनी सोवियत सरकार में, लेनिन द्वारा प्रस्तावित शिक्षा मंत्री का पद भी ठुकराया।

*उनके प्रसिद्ध ग्रंथ Mutual Aid (हिंदी अनुवाद-अनुवाद-संघर्ष या सहयोग) में, डार्विन के इस सिद्धांत का कि विकास की प्रेरक शक्ति प्रणियों का आपस में जीवन संघर्ष है, उनकी एक दूसरे के साथ प्रतियोगीता का परिणाम है, खंडन मिलता है। अपने साइबेरिया के वास्तव्य में प्राणियों पर किए गहन अध्ययन के आधार पर उन्होंने प्रतिपादित किया किए विकास संघर्ष का नहीं तो पारस्परिक सहयोग, सहायता और सम्मिलित सामाजिक उद्योग का परिणाम है।

*उनकी अन्य प्रसिद्ध कृति है रोटी का सवाल (Conquest of the Bread)|

*आठ जनवरी 21 को उनकी न्यूमोनिया से मृत्यु हो गई।

*अराज्यवादी कम्युनिज्म को व्यवस्थित रूप क्रोपाटकिन ने ही दिया।

उनके अन्य विचार-

*समाज को आज का रूप सामाजिक परिश्रम के कारण ही मिला है।

*सामाजिक विपत्तियों का कारण संपत्ति का असमान वितरण है।

*उस युग में समाजवादी जगत में अराज्यवादी माइकेल बाकुनिन और कार्ल मार्क्स तो वैज्ञानिक जगत में डार्विन का बोलबाला था। लेकिन क्रोपाटकिन ने तीनों के विचारों के प्रति असहमति प्रकट की। उन्होंने बाकुनिन के विध्वंसात्मक परिवर्तन के हिमायती होने का समर्थन नहीं किया।

पियरे जोसेफ प्रुधो (1809-65)

*बिना सरकार, बिना वैयक्तिक संपत्ति और बिना असमानता का सामाजिक संगठन प्रुधो का आदर्श था। किंतु ये सभी मिलकर एक अभावात्मक संकल्पना का ही निर्माण करते हैं। भावात्मक, क्रियात्मक या सकारात्मक बातें उनके दर्शन में बहुत कम है। अन्य कई बातों के संदर्भ में भी कई विरोधाभासी बातें उनके विचारों में मिलती है।

*1846 में प्रकाशित उनकी पुस्तक थी ' दरिद्रता का दर्शन ' इसमें उन्होंने समाजवादी और साम्यवादी विचारों का खंडन किया। लेकिन उनके स्थान पर वे कोई पर्यायी रचनात्मक सिध्दांत पेश नहीं कर सके। उसके उत्तर में मार्क्स का ग्रंथ आया "दर्शन की दरिद्रता'।

अन्य अराजकतावादी चिंतक तथा क्रांतिकारी-

*विल्हेम वेटलिंग (1808-71)

*मैलंटेस्टा (जन्म-1853-इटली)

*एरिका लुई माइकेल (जन्म-1830)फ्रांसीसी महिला अराज्यवादी। क्रांति के मोर्चे पर हमेशा आगे रहनेवाली।

*एमा गोल्डमैन (जन्म-1866) तथा अलेक्जेंडर बैकमेन-रूस।

*स्पिरिडोनोवा। (रूस)

साम्यवादी चिंतक : कार्ल मार्क्स

*जन्म:5-5-1818: जर्मनी के ट्रेवेज नगर में एक यहूदी परिवार में हुआ था।

*23 वर्ष की आयु में, जेना विश्वविद्यालय से पी.एच.डी.की उपाधि ली। प्रबंध का विषय था, "देमोक्रेतु और एपीकुरू के प्राकृतिक दर्शन"

*1842 में उन्होंने अपने एक मित्र नवाब फान वेस्टफालेन की रूप - गुण संपन्न लडकी जेनी से विवाह किया, जिसने मार्क्स के अत्यंत बुरे दिनों सहित पूरा जीवन उनका साथ दिया। इतना ही नहीं तो मार्क्स के वैचारिक यात्रा में भी वह साथी थी। 1881में उसकी मृत्यु हो गई।

*1843 लेकर तो 1849 तक मार्क्स को एक देश से दूसरे देश निर्वासित बनकर घूमना पडा। लेकिन 1849 के बाद का सारा जीवन उन्होंने लंदन में बिताया। पूरा जीवन ही विपन्नता में बीता। अंतिम दिन व्याधिग्रस्त रहे। उन्हें छह संतानें हुईं। दो लडके और चार लडकियाँ। इनमें से दोनों लडके और एक लडकी बचपन में ही मर गए।

*ग्रंथ संपदा-

#श्रम और पूंजी (1845 ई. स.)

दर्शन की दरिद्रता (1847 ") प्रुधो के ग्रंथ ' दरिद्रता का दर्शन ' के खंडन में।

साम्यवादी घोषणापत्र (1848)

मूल्य, कीमत और लाभ (1865 में दिया एक भाषण)

कैपिटल खंड1--(1867-जर्मन सं)

भाग एक- पूंजीवादी उत्पादन

" दो- " वितरण

"तीन। " उत्पादन (संपूर्ण रूप में) इसे मार्क्स की मृत्यु के बाद एंगेल्स ने संपादित और प्रकाशित किया। वास्तव में 1859 में प्रकाशित 'राजनैतिक अर्थशास्त्र की आलोचना ' इस किताब का विस्तार ही 'कॅपिटल" है।)

#'अतिरिक्त मूल्य के सिद्धान्त': कैपिटल की चौथी जिल्द के लिए एकत्र की सामग्री, मार्क्स की मृत्यु के बाद काऊत्स्की के हाथ लगी और उन्होंने इस नाम से उसे प्रकाशित किया।

*चौदह मार्च1883 को मार्क्स की मृत्यु हुई।

*मार्क्स एक क्रांतिकारी और समाजवादी तो थे लेकिन सबसे पहले वे एक मानवतावादी थे। शोषण, उत्पीडन और अन्याय से मुक्त समाज की कल्पना उन्होंने की थी। उन्होंने शोषित जनता को घोषणाएं दीं-

- दुनिया के श्रमिकों एक हो।

-श्रमिकों आगे बढो। तुम्हारे पास खोने के लिए हैं ही क्या? तुम्हारी बेडियों के सिवाय। जीत के लिए है सारी दुनिया।

*मार्क्स के प्रमुख सिद्धांत-

निरीक्षण और विश्लेषण के आधार पर आधारित मार्क्स के सिद्धान्तों को 'वैज्ञानिक समाजवाद' कहा जाता है।

-इतिहास की भौतिक या आर्थिक व्याख्या।

-वर्गसंघर्ष का सिध्दांत।

-मूल्य का सिध्दांत और अतिरिक्त मूल्य।

-ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिध्दांत।

-पूंजीवाद का विश्लेषण।

-राज्यसंस्था पर विचार।

-सर्वहारा अधिनायकवाद और बोनापार्टिज्म।

-मार्क्सवाद के पूर्वाधार: फायरबाख का प्रभाव - हेगल का द्वंद्ववाद -भौतिकवाद।

<u>फेडरिक एंगेल्स</u>

*मार्क्सवाद को कार्ल मार्क्स और फेडरिक एंगेल्स का संयुक्त प्रयास भी माना जाता है। हालांकि एंगेल्स ने पूरा श्रेय मार्क्स को ही दिया है। उन्होंने विपत्ति के दिनों में मार्क्स की भरपूर आर्थिक सहायता भी की।

*जन्म:28-11-1820को जर्मनी के बारमेन नामक शहर में टेक्सटाइल उत्पादक के घर हुआ था। लेकिन बाद का वास्तव्य लंदन में ही रहा। मृत्यु 5-8-1895 को हुई।

*एंगेल्स ने मात्रा-गुण तथा निषेध के द्वंद्ववाद के दो नियम विकसित किये।

*'इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा' इन शब्दों का अविष्कार एंगेल्स ने ही किया।

एंगेल्स की रचनाएँ-

.समाजवाद:यूटोपिया से वैज्ञानिक तक

.1884में इंग्लैंड के श्रमिक वर्ग की अवस्था।

.परिवार की उत्पत्ति।

.फायरबाख: समाजवादी दर्शन के मूल।

लुविक फायरबाख एण्ड दी आउटकम ऑफ जर्मन क्लासिकल फिलासफी।

.एन्टी ड्यूरिंग: इसमें द्वंद्वाद और भौतिकवाद ही मुख्य विषय वस्तु है।

"भौतिक अस्तित्व वास्तवता है।"

.डायलेक्टिक्स ऑफ नेचर।

मार्क्स और मार्क्सवाद पर आक्षेप

*मार्क्स और एंगेल्स ने यह मान लिया था कि आर्थिक अधिकारों में समानता की व्यवस्था होने पर मनुष्य की अधिकतर समस्याओं का अंत हो जाएगा। सामाजिक सांस्कृतिक शोषण भी अपने आप समाप्त हो जाएगा। चिंतकों ने इसे जटिल मानवीय जीवन और मन का अत्यधिक सरलीकरण बताया।

मार्क्स के समय मनुष्य मन का अध्ययन करने वाले मानसशास्त्र का उदर लगभग नहीं हुआ था।

*आज दुनिया ने लगभग मान लिया है कि इससे आगे दुनिया के सामने लोकतंत्र को स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं। जिस व्यक्ति ने इस भविष्य की अपरिहार्यता को पहचान लिया था वह था बर्नस्टीन। लेकिन मार्क्स ने इस संभावना की दखल नहीं ली।

*मार्क्स के विचार यूरोप उन्मुख थे या गोरी जाति की श्रेष्ठता से ग्रसित थे। उन्होंने गैरयूरोपीय समाजों को उत्पादन की एशियाई पद्धति बताया । भारत और चीन के समाजों को मूल रूप से स्थिर बताया। उन्होंने यूरोप को प्रगति से तो पूर्व को जडता से जोडा। औद्योगिक विकास और समाजवाद के माध्यम से यूरोप को पूर्व का मुक्तिदाता बताया।

*मार्क्स ने स्वयं अपने विचारों की द्वंद्वात्मक समालोचना कभी नहीं की। वे अपने प्रति इतने आश्वस्त थे कि उन्होंने संभव नीयत विकल्पों को नजरअंदाज किया।

दूसरी ओर पूंजीवाद ने, स्वतंत्रता की उपलब्धता के कारण, अपने विकास की कई गुना अधिक संभावनाएं विकसित कर लीं। प्रबंध व्यवस्था में सुधार, गतिमान उत्पादन प्रणालि का विकास आदि द्वारा वह अपने स्थायित्व को और मजबूत करता है। इसके अतिरिक्त उसने श्रमिकों के निर्धनीकरण की प्रक्रिया को कल्याणकारी राज्य की अवधारणा से रोक दिया। श्रमिकों के वेतन में सुधार करके, उन्हें सत्ता और संपत्ति में, प्रबंधन में भागीदारी देकर। पूंजीवाद ने श्रमिक और श्रम का स्वरूप ही बदल दिया। दिमागी श्रम करने वालों का बहुत बडा वर्ग अस्तित्व में आया(टेक्नोक्रॅट और ब्युरोक्रॅट), सुविधा पूर्ण जीवन जीने वाला, यथास्थिति में रुचि रखने वाला। परिवर्तन को वैचारिक आधार ऐसा बौद्धिक वर्ग ही देता है।

मार्क्स ने श्रम को केवल शारीरिक श्रम के रूप में ही लिया।

*उधर रूस और चीन में मार्क्सवाद/साम्यवाद का प्रयोग हो रहा था। लेकिन वहाँ विचारकों, उच्च कोटि के बुद्धिजीवीयों को तरह-तरह की यंत्रणाएं देकर साम्यवादी आंदोलन ने अपने विकास के रास्ते ही बंद कर लिए। बुद्धिजीवीयों को आजादी तो देनी पडेगी तभी विकल्प उभर सकते हैं और समस्या का सटिक समाधान उपलब्ध हो सकता है। दुनिया आगे बढते समय हर क्षण नई समस्याएं उभरती रहेगी और हमें उनके समाधान ढूंढने में भी व्यस्त रहना होगा और कोई विकल्प नहीं है। इस कारण किसी भी चिंतक का सिद्धांत अंतिम नहीं हो सकता। परिवर्तनवादी मार्क्सवाद का सार भी तो यही है। जब यह बात अनदेखी कर दी जाती है तो सिद्धांत, मृत संप्रदाय बन जाता है। एक तरह के नियतिवाद का उसे स्पर्श हो जाता है।

*मार्क्स के अनुसार समाजवादी क्रान्ति सर्वप्रथम औद्योगिक दृष्टि से उन्नत देशों में होगी। लेकिन वह रूस और चीन जैसे अविकसित देशों में हुई। मार्क्स की भविष्यवाणी वास्तव में नहीं उतरी।

इसपर डॉ रामविलास शर्मा की टिप्पणी इस तरह है-

पश्चिम के औद्योगिक दृष्टि से उन्नत देशों में साथ-साथ समता, आजादी, बंधुता के विचार भी पिछली सदियों से जडें जमा रहे थे। अतः वहां अधिनायकवाद का उभरना जनता इतनी आसानी से स्वीकार नहीं कर सकती थी। दूसरी बात यह थी कि रूस में हुई क्रांति मार्क्स के सपनों की शुध्द श्रमिक क्रांति नहीं थी। रूसी क्रांति का सारतत्व जनवादी क्रांति का था। (किसानों की क्रांति को जनवादी क्रांति कहते हैं।) क्योंकि उस समय वंचितों में श्रमिकों से अधिक रूसी किसान थे।

*झार के विरुद्ध हुई क्रांति एक तरह कई प्रदशों की स्वाधीनता की क्रांति भी थी। बोल्शेविक क्रांति केवल रूसी प्रदेशों में ही नहीं हुई थी।

*रूसी क्रांति को लेनिन जैसा फौलादी नेतृत्व मिला था और वहाँ उस समय पूंजीवाद इतना शक्तिशाली नहीं था कि बोल्शेविक दल को पराजित कर, सत्ता छिन ले।

फिर भी-

मार्क्सवाद को उन्नीसवीं सदी के विचारों का निचोड कहा जाता है। इसके तीन स्रोत हैं-

1) जर्मनी का क्लासिकीय दर्शन (विशेषतः हेगल का द्वंद्ववाद)|

2) इंग्लैंड के क्लासिकी अर्थशास्त्रियों का अर्थशास्त्र।

3) फ्रांसीसी समाजवादियों का आदर्शवाद।

मार्क्स कहते थे, "भौतिक विश्व को न केवल समझा जाना चाहिए, बल्कि उसे बदलना भी है।"

उनका एक और बहुचर्चित कथन है, जिसे अधिकतर कोई तरह के विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया।

"धर्म जनता के लिए अफीम है।""मनुष्यता पर आधारित समाज की निर्मिति के लिए धर्म का अन्त होना आवश्यक है।"

वास्तव में उन्होंने मनुष्यता के इतिहास में धर्म द्वारा निभाई गई भूमिका को एक हद तक मान्य भी किया था।

कम्युनिस्ट

*फ्रांसीसी शब्द 'कम्युनाउते' का अर्थ है सामुहिक स्वामित्व। 'कम्युनिज्म' का संबंध 'एटिएने कैबे' (1788-1856) के सिद्धान्तों से है। 1830 की क्रांति के दौरान फ्रांस में इसका प्रयोग सर्वप्रथम किया गया।

*1840 के दशक में कम्युनिज्म का एक अलग लेकिन जुझारू अर्थ विकसित हुआ जो केवल ' समाजवाद ' से अलग था। मार्क्स - एंगेल्स ने इसके साथ सामूहिक स्वामित्व और उपभोग के साथ-साथ क्रांतिकारी वर्गसंघर्ष का अर्थबोध भी जोड दिया।

*विदेशों में रहने वाले जर्मन श्रमिकों का 1836 में एक संगठन बना 'लीग ऑफ जस्ट' या'न्यायी लीग'। एंगेल्स इसमें शामिल थे। यही लीग मार्क्स के प्रभाव में आकर 'कम्युनिस्ट लिग ' बन गई। 1847में लीग की प्रथम कॉन्ग्रेस लंदन में हुई। दूसरी दिसं 1847 में। वहीं मार्क्स-एंगेल्स पर एक नया प्रोग्राम बनाने का काम सौंपा गया।

*मार्क्स ने आयु के उन्तीसवे वर्ष में इसे पूरा किया। इसने ही 'कम्युनिस्ट घोषणा पत्र' कहते है। यह मार्क्स की आरंभिक रचनाओं में से एक है। मार्क्स ने इसके बाद कितने ही ग्रंथ लिखे लेकिन वे मानो इस घोषणा पत्र की व्याख्याएं है। यह 1848में प्रकाशित हुआ। इसका अन्योन्य-साधारण महत्व है।

कम्युनिस्ट घोषणा पत्र

*इस घोषणा पत्र से ही मानो जागतिक कम्युनिस्ट आंदोलन का आरंभ हुआ। क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन को दुनिया में जितनी भारी सफलता मिली उतनी किसी और आंदोलन को नहीं। एक समय पूरी दुनिया में कम्युनिस्ट पार्टियों की सदस्य संख्या तेरा करोड थी। यहां यह ध्यान रखने की बात है कि पार्टी की सदस्यता इतनी आसानी से नहीं मिलती थी। उसके लिए कडी मेहनत करनी पडती थी।

*1917 की रूसी क्रांति के पीछे - पीछे हंगेरी में सोवियत राज्य कायम हुआ लेकिन वह बहुत अल्पकालिक ठहरा।

आंतरराष्टीयसर्वहारा संगठन (प्रथम)

*1864में यूरोप के श्रमिकों का एक क्रांतिकारी संगठन लंदन में बनाया गया। उसपर कभी मार्क्स के अनुयायियों का तो कभी अराजकतावादियों का प्रभुत्व रहा। 1872में मार्क्स ने इसके जनरल सेक्रेटरी पद से त्यागपत्र दे दिया। फिर इसका केंद्र न्यूयॉर्क चला गया। 1874 में इसने दम तोड दिया।

*द्वितीय इंटरनैशनल

1889 में नया आंतरराष्टीय कामगार संगठन बनाया गया। इसे द्वितीय इंटरनैशनल कहा जाता था। दूसरी इंटरनेशनल और विभिन्न देशों के समाजवादी दल पहले से ही सैन्यवाद का विरोध और युद्ध को रोकने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन युद्धोन्मादी शक्तियों ने इन नेताओं का निर्ममता पूर्वक दमन किया। कइयों की हत्याएं की गईं। उदाहरण के तौरपर फ्रांसीसी समाजवादी नेता जॉन जोरेस की 31 जुलाई 1914 को हत्या की गई। लिबनेश्ट और रोझा लक्झेमबुर्ग ने जर्मनी में 'स्पार्टकस' नाम का एक 'आंतरराष्टीयवादी दल बनाया था। बुल्गारिया में वसिल कोलारोव, दिमित्री ब्लागोयेव, गेओर्गी दिमित्रोव के नेतृत्व में युद्ध के विरोध में आवाज उठ रही थी। स्विटझरलंड में के 'जिमखाल्ड' में ऐसे समाजवादियों का आंतरराष्टीय सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में' जिमखाल्डवामपंथ गुट का उदय हुआ जो अंधराष्टवाद का विरोधी था लेकिन फिर भी प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो ही गया। आंतरराष्टवाद और राष्ट्रवाद की कशमकश में पूरा समाजवादी आंदोलन बिखर गया, द्वितीय इंटरनैशनल के साथ।

*तृतीय इंटरनैशनल

1919 में साम्यवादी दल ने इसे मास्को में बनाया। लेकिन यह भी 1943 में भंग हो गया।

*वैसे 'मूलभूत मार्क्सवाद' का बचाव करने वालों में चार गुट प्रमुख थे। इन्हें-' चार की पीढी 'कहा जाता है।1) लेनिन का बोल्शेविज्म2) मेन्शेविज्म3) लक्झेमबुर्ग के नेतृत्व वाला गुट जिसमें लिबनेश्ट, कार्ल रादेक आदि थे।

4) ऑस्टोमार्क्सवादी गुट:

कार्ल रेनर (1870-1950)

रूडोल्फ हिल्फरडिंग (1877-1941)

ऑटो बॉ

वर (1881-1938)

मैक्स ॲडलर (1869-1924)

*क्लारा जेटकिन और रोझा लक्झेमबुर्ग ये दो जबरदस्त समाजवादी महिलाएं थीं।

लियोन ट्राट्स्की

*जन्म: सात नवंबर1879, युक्रेन के खरगोन प्रांत में हुआ। उनका असली नाम था लेव डविडोविचबोन्स्टाईन। वे एक तेजस्वी वक्ता, संगठन कर्ता और असाधारण क्रांतिकारी थे। वे रूसी क्रांति करने वाले तीन प्रमुख नेताओं में से एक थे। वे नास्तिक थे। अजेय रूसी लाल सेना के गठन कर्ता वे ही थे।

*क्रांति के पूर्व अर्थात 1917 के पहले वे एक निर्वासित की तरह कई देशों में रहें।

*लेनिन की मृत्यु के बाद स्टालिन का पार्टी पर पूरा नियंत्रण हो गया था। स्टालिन से हुए वैचारिक मतभेदों के कारण ट्राट्स्की को फिर निर्वासन में जीवन बिताना पडा।इतना ही नहीं तो जिस क्रांति के वे उच्च नेता रहे उसी रूस में उन्हें देशद्रोही ठहरा कर, उनकी अनुपस्थिति में, मौत की सजा सुनायी, गयी। 20-8-1940 आकान-मेक्सिको में, सोवियत खुफिया एजेंट द्ववारा, एक बर्फ तोडने के हथियार से खोपडी के पीछे वार कर हत्या कर दी गई।

*निरंतर क्रांति का सिध्दांत

*वास्तव में यह सिद्धान्त मार्क्स- एंगेल्स द्वारा ही प्रतिपादित था। लेकिन ट्राट्स्की ने इसका इतने जबरदस्त तरीके से पुनःप्रतिपादन किया कि उसके साथ ट्राट्स्की का नाम जुड गया। इसके अनुसार सारी दुनिया में एकसाथ क्रांतियां होनी चाहिए, चाहे उसके लिए आक्रमण ही क्यों न करना पडे। अन्यथा एक देश में हुई क्रांति को स्थाई नहीं होने दिया जाएगा।

* इसके विरोध में स्टालिन ने यह स्थापित करने का प्रयत्न किया कि एक देश में भी क्रांति सफल हो सकती है अगर व्यवस्थित नियोजन हो| और उसे स्थायी बनाने के लिए उसीपर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

* शुरू में ट्राट्स्की ने संक्रमण काल में क्षम्य कहते हुए अधिनायकवाद का समर्थन किया। लेकिन बाद में स्टालिन के कार्यकलापों को देखकर ट्राट्स्की ने बडी पीडा के साथ कहा कि जो कदम उसी समय अस्थायी समझे गये थे वे समय के साथ स्थायी और वैध बनते चले गए।

निकोलाई बुखारीन

*जन्म: मास्को में 27-9-1888 में।

*लेनिन के बाद बुखारीन ही थे जिन्होंने पार्टी का आम दर्शन व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया। कहते हैं उनके चेहरे पर एक संत का भाव हुआ करता था, विद्रोही का नहीं। 1917 से लेकर 1929तक वे 'प्रावदा' के संपादक रहे। 1926 तक कम्युनिस्ट इंटरनैशनल का नेतृत्व करते रहे। लेकिन दोनों स्थानों से उन्हें जबरन हटा दिया गया। 1934-1937केबीच इसबेस्तिया के संपादक रहे। 1936 में नये संविधान को स्वीकार किया गया था। उसे स्टालिन संविधान कहा जाता है लेकिन उसके असली लेखक बुखारीन और याकोव्लेव्ह को माना जाता है। उसमें सार्वत्रिक मताधिकार आदि का अंतर्भाव था। लेकिन स्टालिन के शासन में उन्हें भी गद्दार कहते हुए 13/14 मार्च 1938को गोली से उडा दिया गया।

ज्यॉर्जी वेलेंन्तीनोविच प्लेखानोव (1856-1918-रूसी)

*वेरा जासुलिच, जासुलिका, सासुलिच (1852-1919) तथा अक्सेल्शेद (1850-1928) के साथ मिलकर 1883में जिन्होंने जिनीवा में "इमैसिपेशन ऑफ लेबर" की स्थापना की थी वे थे प्लेखानोव। यह प्रथम रूसी मार्क्सवादी संगठन था। समाजवादी विचारों के इतिहास में रूसी मार्क्सवाद के पिता के रूप में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान है।

*मार्क्स का 'ऐतिहासिक भौतिकवाद 'तो

एंगेल्स का 'डायलेक्टिकल " '

इसमें 'डायलेक्टिकल भौतिकवाद' शब्दों के आविष्कारक स्वयं प्लेखानोव है।

*वे वास्तव में एक मानवतावादी थे। उन्होंने रूस में समाजवाद की स्थापना में जल्दबाजी न करने की सलाह दी थी। वास्तविक प्लेखानोव ने व्यक्तिगत आतंकवाद का विरोध किया था। फिर भी आगे के इतिहास में (स्टालिन काल) उन्हें इसका समर्थक बताया गया।

*उन्होंने व्यापक पैमाने पर साहित्य सृजन किया।

रोझा लक्झेमबुर्ग

*जन्म: 5-3-1871'जम्मोच' नामक स्थान पर हुआ था। यह मुख्यत: यहूदी शहर था और आस्ट्रिया, पोलैंड तथा रूस के सांस्कृतिक मिश्रण से प्रभावित था। यह 1815 से रूसी शासन के अंतर्गत था।

*उन्होंने ज्यूरिख विद्यापीठ से कानून और दर्शन में दो डाक्टरेट की उपाधियां लीं। 1898 में वे बर्लिन आयी और वहाँ पत्रकारिता और लेखन करती रही। उन्होंने जर्मनी में समाजवाद के लिए बेहद ज्यादा काम किया। रोझा 1905की रूसी क्रांति में सक्रिय थी। दो वर्ष भूमिगत रहने के बाद लिबनेश्ट और विल्हेम पीक के साथ पकड ली गई। उन्हें और लिबनेश्ट को 15-1-1919को अदालत ले जाया जा रहा था तो प्रशियन अफसरों द्वारा बडी बेरहमी से मार डाला गया। इससे पूर्व भी उन्होंने कष्टमय कारावास की सजाएँ भोगी थीं।

धार्मिक समाजवाद

*समाजवाद के विषय में तो हमने देखा लेकिन उसके जो पूर्वाधार थे उन्हें जाने बिना समाजवाद का इतिहास पूरा नहीं होगा।

*सामाजिक असमानता के विरोधी विचारधारा-

यह एक लंबी चिंतनधारा है। इसमें 800 ई.पू. में फिलिस्तीन का अमो, यहूदी सन्त इसैय्या (740-700 ई.पू.), जर्मिया, एजकियल आदि यहूदी संत मिलते हैं।

भारत: बुद्ध (563-483 ई.पू.) उनके संघ में भिक्षु-भिक्षुणियों द्वारा आर्थिक साम्यवाद का प्रयोग किया गया।

*संपत्ति के समान बंटवारे का प्रयोग:

बुद्ध के विचारों से प्रभावित होकर तिब्बत के शासक मुने-चन-पो ने उन्नीसवीं सदी में संपत्ति के समान बंटवारे का प्रयोग, अपने शासन काल में तीन बार किया। लेकिन कुछ दिनों में आलसी और नासमझ लोग मिली हुई संपत्ति खो बैठते थे और संपत्ति फिर चालाक लोगों के पास चली जाती थी।

*ईरान में मज्दक (484 ई.) की आध्यात्मिक शिक्षा, चीन में मो-ती (575-528 ई.पू), यूनान में प्लेटो (427-347 ई.पू.) का 'प्रजातंत्र' ग्रंथ, रोम में सेनेका (3 ई.पूर्व से 65 ई.तक) आदि।

*समानता समर्थक साहित्य: मध्य काल

. ईसाई संत अगस्तीन की 'भगवान की नगरी'

इसमें हर चीज भगवान की देन है। मनुष्य को कुछ करना ही नहीं था। सभी एक दूसरे की भलाई करेंगे।

.अगस्तीन के समय के दरम्यान ही भारत में भी एक धर्म नगर 'संभल' की कल्पना प्रचलित हुई थी। बौद्धों की परंपरा के अनुसार बोधिसत्वों का यह देश उत्तर दिशा में है।

*दूसरी सहस्राब्दी

.सवोनरोला (1452-1498 ई.): इटली, फ्लोरेंस का धर्मप्रचारक। इसने फ्लोरेंस के लिए विधान बनाया। उसने लोगों से कहा कि हमें बुराइयां दूर करनी होगीं और ईश्वर के विधान के अनुसार शासन करना होगा। लेकिन शासकों का तो छोड दो, प्रत्यक्ष रोम का पोप भी तो एक वैभवशाली महन्त ही था। ईसा का साम्यवाद आध्यात्मिक चीज थी। उसका किसी भी तरह का प्रयोग संसार में करना पाप था। शासकों और पोप ने लोगों को भडकाया। इस प्रजातंत्र पर हमला कर उसे नष्ट कर दिया और इस 'साम्यवादी' धर्म प्रचारक की हत्या कर दी।

इसकी मृत्यु के साथ ही इस धारा का अंत हो गया।इतिहासकारों ने इस चिंतन धारा को 'धार्मिक समाजवाद' नाम दिया है।

यूरोप में विचार मंथन और क्रांतियां

*इंग्लैंड

चौदहवीं सदी में इंग्लैंड में किसानों की बगावतें हुईं। उनके नेता थे जॉन वायकिलफ, जॉन बाल, जैक केड आदि। इनमें से जॉन बाल और जैक केड को फांसी पर लटकाया गया था।

सत्रहवीं सदी: टाइम हॉब्स और जॉन लॉक आदि ने संपत्ति के अधिकार तथा निरंकुश शासन का भारी समर्थन किया था। जॉन लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में वस्तु का मूल्य नगण्य होता है। लेकिन जब कोई व्यक्ति उसमें अपना श्रम मिलाता है तो उसे मूल्य प्राप्त होता है और वह चीज उस व्यक्ति की हो जाती है। लेकिन यही विचार समाजवादी सिद्धांत के लिए भारी

सहायक सिद्ध हुआ। इसी आधार पर यह कहा जाने लगा " जो वस्तु में अपना श्रम नहीं मिलाता, वह उस वस्तु का अधिकारी नहीं हो सकता।"

.एडम स्मिथ: श्रम से संपत्ति पैदा होती है, इसमें स्मिथ ने संशोधन किया, "वैयक्तिक संपत्ति वाला अपने धन द्वारा उपज में अधिक सुधार और वृद्धि करता है, इसलिए वह भी उसी तरह का मालिक है, जिस तरह श्रम जोडनेवाला। इस संपत्ति की रक्षा के लिए नागरिक सरकार की आवश्यकता है।

*संपत्ति के विरोधी

पादरी लॉबर्ट वॉलेस (अठारह वीं सदी) ने पादरी माल्थस से भी पहले कहा था कि बढती जनसंख्या पर संयम रखने की आवश्यकता है। अन्य व्यक्ति थे टॉमस स्पेन्स, विलियम ओगिल्वी आदि। ये सुधार वादी थे।

लेकिन कुछ क्रांतिकारी विचारक भी थे। जैसे विलियम गॉडविन, चार्ल्स हॉल, टॉमस हार्डी, कवि और वक्ता जॉन थेलवल। उन्होंने जनता को जागरूक करना शुरू किया।

.रिकार्डो: यह वैयक्तिक संपत्ति का समर्थक था। उसने दो बातें बताईं:-1) किसी सौदे का विनिमय (बदलने, बेचने) मूल्य, उन श्रम पर निर्भर है जो कि उसे पैदा करने में जितने परिमाण में जरूरी हैं अथवा अत्यंत अन-अनुकूल परिस्थिति में भी जितने परिमाण में श्रम की उसको जरूरत है।

2) मजदूरी, मजदूर की पैदा की हुई चीज से निश्चित नहीं होती बल्कि उस मात्रा से निश्चित होती है जो कि श्रमिक के लिए अपने खाने, कपडे, घर, जीवन के लिए कुछ अन्य उपयोगी वस्तुएं और बिना अधिक-कमी के अपने वंश को कायम रखने पर जरूरी है। पूंजीवाद मजदूरी देते वक्त यही ख्याल रखता है।

लेकिन इन दोनों बातों का उपयोग समाजवादियों ने पूंजीवाद पर जबर्दस्त हमला करने के लिए किया।

.मजदूर विद्रोह (1813): इसके कारण दर्जनों श्रमिकों को फांसी दी गई। 1820 में एंड्रयू हार्डी, स्पेन्स के पांच अनुयायी और अन्यों को मृत्युदंड दिया गया।

चार्टिस्ट आंदोलन---

1830 के दरम्यान इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति पूरी हुई। लेकिन इसी दरम्यान एक जबरदस्त मंदी आयी। मजदूरों के साथ किसानों की हालत भी बुरी हुई। दूसरी तरफ पूंजीपतियों ने अपनी हालत सुधारने के लिए श्रमिकों को साथ लेकर आंदोलन चलाया। परिणामत: 1832 का पार्लमेंटरी प्रथम सुधार कानून पास हुआ। लेकिन श्रमिकों को मात्र, वोट देने का अधिकार भी नहीं मिला।

परिणामत: 'लंदन श्रमिक संघ' 1836में कायम हुआ। शुरुआत तो हुई ओवेन के नरम विचारों से। लेकिन बाद में फरवरी 1837 में संघ ने छह मांगों का एक मांगपत्र पेश किया। यही मांगें पीछे 'चार्टर' कहलाई और उस आधार पर आंदोलन का नाम 'चार्टिस्ट आंदोलन' पडा। मांगें थीं-

1) सब बालिगों को वोट देने का अधिकार मिलें। (1867, 1884, 1918 और 1928) इन वर्षों के सुधार कानूनों द्वारा वोट देने का अधिकार बढते-बढते, इंग्लैंड में सभी बालिग स्त्री, पुरुषों को यह अधिकार मिला।

2) पार्लमेंट का साल में कम से कम एक अधिवेशन हो। बाद में वह एक से अधिक बार होने लगा।

3) मतदान गुप्त हो (यह 1872में हुआ)।

4) पार्लमेंट का सदस्य बनने, संपत्ति की शर्त न हो। (1858 में यह शर्त हटी)।

5) पार्लमेंट के सदस्यों को वेतन मिले। (इसकी पूर्तता 1911 में हुई)।

6) चुनाव क्षेत्र एक समान हो।

चार्टिस्ट मसौदा विलियम लोवेट (1800 -1877) नाम के एक बढई ने बनाया था। इसे मनवाने के लिए 1839 में राष्ट्रीय चार्टर संस्था बनवाई गई। इसके नेता थे आयरिश बैरिस्टर ओकोनार, विलियम लोवेट, अर्नेस्ट जोन्स, ओब्रायन। संस्था की सदस्य संख्या चालीस हजार तक पहुंच गई थी। जनता और श्रमिकों ने ऊंची-नीची स्थिति के बावजूद अर्नेस्ट जोन्स के नेतृत्व में आंदोलन जारी रखा। दरम्यान श्रमिकों की स्थिति सुधारने के लिए कुछ सुधार हुए भी।

आंदोलन के कारण कानून बने-

*1833 में प्रथम फॅक्टरी अॅक्ट पास हुआ।

*1842में खदानों में काम करनेवाली महिलाओं और बच्चों को सुरक्षा प्रदान करने वाला कानून बना।

*1847में काम के घंटे 10 करनेवाला कानून बना।

*21-5-1839 की ग्लासगो की ढाई लाख की सभा से यह आंदोलन शुरू हुआ था। ब्रिटिश श्रमिक वर्ग ने उन्नीसवीं सदी में खडा किया यह सबसे बडा आंदोलन था।

*वर्ग युद्ध के तत्व पर खडा किया गया, शुद्ध श्रमिक वर्ग का यह प्रथम आंदोलन था।

*यह आंदोलन किन्हीं खास आर्थिक मांगों के लिए नहीं था तो अपनी आर्थिक परिस्थिति के सुधार के लिए श्रमिकों द्वारा किया गया राजनैतिक आंदोलन था।

*इस आंदोलन में हिस्सा ले रहे श्रमिकों के नारे थे-'तलवार से मरने वाले बेहतर है, भूखे मरने वालों से----'

सात जुलाई1839 को साडे बारह लाख हस्ताक्षर वाला मांग पत्र पेश किया गया।

(ऐसे मांग पत्र मई 1841, मई 1842, 1844, 1846 में पार्लमेंट को सादर किए गएं। कहते है 1844 के पत्र पर सत्तावन लाख हस्ताक्षर थे।) लेकिन सभी ठुकरा दिए गए।

*इस कारण श्रमिक और जनता विद्रोह करने पर उतारू थी। चार जुलाई की शाम को बर्मिंघम में मजदूरों की शांतिपूर्ण सभा हो रही थी। उसपर बिना सूचना दिए पुलिस टूट पडी। झडपें शुरू हुईं। पंधरा जुलाई को श्रमिकों ने बर्मिंघम को अपने कब्जे में ले लिया। पांच दिनों तक शहर विद्रोहियों के कब्जे में रहा।

*सरकार की सख्ती के कारण लोगों को गुप्त संगठन बनाने विवश होना पडा। दक्षिणी वेल्स में विद्रोहों की तैयारियॉजोरो से हुईं। मुठभेडें हुईं। लोग मारे गए। जून 1840 तक पांच सौ चार्टिस्ट गिरफ्तार हुए थे। उनके नेता जॉन फ्रॉस्ट, जेफानिया विलियम, विलियम जॉन्स को फांसी की सजा सुनाई गई जो बाद में आजीवन कारावास में बदली गई।

*1851 में हार्नि और जॉन्स के प्रयासों से राष्ट्रीय चार्टर सभा ने एक विस्तृत श्रमिक वर्ग्गीय कार्यक्रम स्वीकृत किया लेकिन चार्टर सभा कमजोर होती गई। अंत में 1854 में इस आंदोलन का अंत हुआ। यह आंदोलन भलेही अपने अंतिम उद्देश्य तक न पहुंच पाया हो लेकिन वह व्यर्थ नहीं गया। इससे दस लाख चार्टिस्ट जुडे थे। इस में कल्पना के स्थान पर प्रयोग की प्रधानता थी। इसके अनुभवों ने आगे, समाजवाद की इमारत खडी करने में बडा योगदान दिया।

* इसके बाद मजदूरों का स्वतंत्र राजकीय संगठन बनाने की आवश्यकता अनुभव होने लगी जो चुनावों के माध्यम से पार्लमेंट तक पहुंच सके। इसी में से ब्रिटेन की मजदूर पार्टी (labour party) अस्तित्व में आई।

*सामन्ती व्यवस्था की तुलना में राजेशाही प्रगतिशील थी। इसलिये शुरू में पूंजीपति वर्ग ने इसका समर्थन यहां तक किया कि, उस कल्पना को भी अपना समर्थन दिया था जिसमें राजा के दैविक हक का तत्व था। राजत्व यह ईश्वर प्रदत्त होने के कारण उसका विरोध करना प्रत्यक्ष ईश्वर के प्रति पापाचरण है। लेकिन अब यह अनियंत्रित सत्ता भी उनके लिए असहनीय हो रही थी। उधर उनकी शक्ति भी काफी बढ रही थी। अत: अब इसके विरोध में उनका आंदोलन शुरू हुआ। यह आंदोलन पंधरहवीं, सोलहवीं, सतरहवीं सदियों में आगे बढा। राजा अधिक तर प्रत्यक्ष पार्लमेंट के सुझावों को भी ठुकरा देता था।

*अतः पार्लमेंट के नेतृत्व में ही जनता ने शस्त्र हाथ में लेकर 16 41से1649तक राजा के खिलाफ युद्ध जारी रखा।1649 में अपने राजा चार्ल्स प्रथम का शिरच्छेद कर इंग्लैंड को प्रजासत्ताक घोषित किया।यह पूंजीपति वर्ग की प्रथम विजय थी।लेकिन यह वर्ग, समाज नियंत्रण एकदम शोषितों के हाथों नहीं जाने देना चाहता था, भले ही वह उनका फायदा जरूर उठा लेना चाहता था।

*फिर पूंजीपति वर्ग ने 1660 में दोबारा राजेशाही स्थापित करने की कोशिश की। 1688 में अंतत: उनके हाथ की कठपुतली, राजा तृतीय विलियम राजा बना। आजतक वही कानूनी राजशाही व्यवस्था शुरू है।

*इस क्रांति का दर्शन अंग्रेज राजनीतिज्ञ और तत्वज्ञ लॉक (1632-1704) ने अपने राज्य सत्ता पर लिखे दो ग्रंथों में 1690 में प्रतिपादित किया। उसने शासन को कार्यपालन, कानून बनाना तथा न्यायदान इन तीन भागों में विभाजित किया। यह त्रिविध विभाजन इसलिए आवश्यक है कि सरकार जनता की आजादी पर हमला न करे। आज भी अस्तित्व में होने वाले ये तत्व बीज रूप में लॉक ने ही लगभग सवा तीन सौ साल पहले प्रतिपादित किए थे।

लॉक की यह विचाधारा 1776 ई.के अमेरिकन क्रांति की और तदुपरांत 1789 के फ्रेंच क्रांति की मूलभूत कल्पना बनी।

धर्म सुधार

*पुराने इतिहास में यूरोप का सबसे शक्तिशाली और बडा केंद्र था रोमन कैथोलिक चर्च। यूरोप की सारी सामंती सत्ता व्हेटिकन में ही केंद्रित थी। सभी राजा उसके ही अंकित थे। यूरोप के धार्मिक और बौध्दिक सोच पर ही नहीं तो व्यापार और उद्योग धंधों पर भी पोप का ही नियंत्रण था। यहां तक कि श्रमिकों की मजदूरी तक वही नियंत्रित करता था। यूरोप की एक तिहाई जमीन पोप की थी। भिक्षुओं में दांभिकता की कमी नहीं थी। रोम के साथ अच्छे संबंध रखने वाले तो मानो यही स्वर्ग का जीवन जी रहे थे। लेकिन आम जनता की हालत गंभीर थी। लोग उब चुके थे। पोप के अधिकारों के विरुद्ध बलवे हो रहे थे। ऐसी स्थिति में ख्रिश्चन धर्म में सुधार लाने की दृष्टि से आंदोलन को गति देने का काम विटेनबर्ग (जर्मनी) के भिक्षुक मार्टिन लूथर (1483-1546) ने किया। उसने मांगें रखीं-

*हर किसी को अपनी विवेक बुध्दि का उपयोग करने की आजादी हो।

*पोप, कार्डिनल, बिशप इनकी ज्यादतियों से मुक्ति मिले।

*भिक्षुकी का स्वरूप व्यावसायिक न हो।

*संतों की अस्थिपूजा आदि धर्मांधता के प्रकार बंद हो।

इन मांगों को पोप ने ठुकरा दिया। लूथर ने (10-12-1520) को पोप के आदेश का जाहिर दहन करते हुए धार्मिक सुधार की परिणामकारक शुरुआत की। इस आंदोलन को सामान्य जनता से लेकर तो राजाओं तक का समर्थन मिला।

जर्मनी के विद्रोह

*सोलह सदी के शुरू में जर्मनी में सामंत और राजे-रजवाडों की लूट के विरुद्ध किसानों के विद्रोह हो रहे थे। उनको श्रमिकों का भी साथ मिल रहा था। ई. 1527ई. शुरू हुआ एक विद्रोह चार सालों तक चलता रहा।

*जर्मनी में 'फेरबाप्तिस्मावादी'के रूप में एक पंथ सामने आया। उसके अनुसार-

"संपत्ति का उपभोग सामुदायिक ढंग से ही होना चाहिए। उसपर निजी स्वामित्व, ख्रिश्चन धर्म के विरुद्ध है। ऐसा साम्यवाद, आवश्यकता के अनुसार बलप्रयोग से भी अंमल में लाना चाहिए।"

इस पंथ के लोगों ने अपने विचारों के लिए बडा त्याग किया, जानें गवाईं, जेल झेली।

लेकिन उन्हें जनता का अधिक साथ नहीं मिला।

अमेरिकन क्रांति

*1776 की अमेरिकन क्रांति यह स्थानिक सरमायेदारों के विरुद्ध नहीं थी, तो समुद्र पार की घर की ज्यादती के विरुद्ध थी। वास्तव में इसकी शुरुआत (19-4-1775) को ही हो चुकी थी। इसका प्रमुख नारा था 'मनुष्य कीस्वतंत्रता'। अमेरिकी महाद्वीप के सभी देशों में दासप्रथा विरोधी आंदोलन होने लगा था। संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी राज्य उदारवादी तो दक्षिणी प्रतिक्रियावादी थे | तनाव इतना बढा कि गृहयुद्ध शुरू हुआ। इस युद्ध में अब्राहम लिंकन के नेतृत्व में दासविरोधी, एकतावादी उत्तरी राज्यों की जीत हुई। उन्नीस जून 1865 को दासप्रथा पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया।

फ्रांसिसी क्रांतियां

*फ्रांस में अलग-अलग विषयों में बौद्धिक जागरण, चिंतकों ने अठारहवीं सदी में ही शुरू कर दिया था। इनमें भौतिकवादी दिदरो (1713-1784) और दालेंबरे (1717-1783) द्वारा संपादित ज्ञानकोश के चालीस खंड,1751-1772 के दरम्यान निकालें गए थे। ब्यूफा, एल्वेतिअ, दोलबाश, रूसो, व्हॉल्टेअर, माब्ली मोरली, देकार्त, वायटलिंग जैसे चिंतक थे।

*क्रांतिकारी गतिविधियाँ

जनता का ब्रास्तिल जेल पर हमला कर राजनीतिक कैदियों को रिहा कराना यह दिन था चौदह जुलाई 1789 का। तभी से यह दिन'स्वातंत्र दिन के रूप में, फ्रेंच जनता बडे उत्साह से आजतक मनाती है। ब्रास्तिल पर हुआ हमला, यह पूरी दुनिया के लिए, जुल्मी सत्ता के खिलाफ किए जाने वाले विरोध का प्रतीक बन गया है।

#10-8-1792 को रोबसपिएर और दांता के नेतृत्व में हुए बगावत के द्वारा राजा को हटा दिया गया। फ्रांस पूरी तरह प्रजासत्ताक राज्य बना।

#21-1-1793 को राजद्रोह के आरोप में राजा का शिरच्छेद किया गया।

सारी उथलपुथल में10-7-1793 को दांता की बलि चढी।

फिर आतंक का माहौल शुरूहुआ। लेकिन 27-7-1794 को रोबसपिएर को भी जान गंवानी पडी। फ्रांस खून के सैलाब में डूब गया।

इसका फायदा उठाते हुए 2-12-1804 को, पूंजीपति वर्ग की मदद से नेपोलियन ने अपने आप को फ्रांस का बादशाह घोषित किया। अधिनायकवाद का दौर शुरू हुआ।

*प्रथम फ्रेंच क्रांति-

बाबेव्ह के नेतृत्व में की जानेवाली, नियामक मंडल की सत्ता उखाड फेंकने की साजिश, विश्वासघात के कारण विफल हो गई। बाबेव्ह को मई 1797में मृत्युदंड दिया गया था। इस प्रथम फ्रेंच क्रांति से ही बंधुता, मानता, स्वतंत्रता का संदेश दुनिया में गया। साथ ही, कानून की दृष्टि में सभी बराबर होने की संकल्पना भी।

#1848 द्वितीय फ्रेंच क्रांति: फरवरी में राज्यसत्ता ध्वस्त हुई। जून महीने में श्रमिक वर्ग ने बगावत की। लेकिन पूंजीपति और जमीनदारों ने मिलकर श्रमिकों की अमानुष हत्याएं कीं और क्रांति कुचल डाली।

पेरिस कम्यून

*1870 में बिस्मार्क की जर्मन फौजों ने फ्रांस पर आक्रमण किया। प्रशियन फौजें पैरिस की सीमा तक आ पहुंची। फ्रांस सरकार के प्रधान मंत्री थिअर्स ने पूंजीपति वर्ग की सलाह से निश्चित किया कि जर्मनी के सामने हथियार डाल दिए जाएं। लेकिन पैरिस के बहादुर श्रमिकों ने इसका विरोध किया। प्रथम इंटरनेशनल के नेतृत्व में पैरिस शहर अपने कब्जे में लिया। दुनिया के इतिहास में प्रसिद्ध 'पॅरिस कम्युन' की स्थापना की। पैरिस कम्यून ने एक के पीछे एक समाजवादी कानून घोषित किए। लेकिन श्रमिकों के पास टुटे फूटे शस्त्र थे। अठारह मार्च 1871 से सात सप्ताहों तक बहादुरी से पैरिस की रक्षा की। लढनेवालों में महिलाएं हजारों की संख्या में थीं। अंत में जर्मन फौजों की सहायता से देशद्रोही थिअर्स ने पैरिस के तीस हजार कम्युनाईड का कत्लेआम किया। साठ हजार श्रमिकों को जेल में ठूंस दिया गया।

पैरिस कम्यून पराजित हुआ लेकिन इतिहास में अमर हो गया। आधुनिक औद्योगिक सर्वहारा का यह प्रथम प्रमुख विद्रोह था। इसी दरम्यान बर्लिन के श्रमिक प्रदर्शन कर पैरिस के श्रमिकों के साथ खडे थे।

*जनता के ऊपर, जनता से अलग खडी सेना की बर्खास्तगी और उसके स्थान पर आम जनता का शस्त्रों से लैस होकर देश रक्षा के लिए डट जाना, आम जनता को, कम्यून में अपने प्रतिनिधियों को भेजने एवं उसे वापस बुलाने का अधिकार देना- पैरिस कम्यून की विशेषताएं थीं।

यही जनवाद हमें अक्टूबर क्रान्ति के तुरंत बाद के दिनों में श्रमिक काउंसिलों (सोवियतों) में दिखता है। 1905 की प्रथम रूसी क्रांति में पेट्रोग्रॅड और मास्को के श्रमिकों ने पैरिस कम्यून की ही पुनरावृति की थी। झारशाही ने इस क्रांति को खून में डुबो दिया था।

*लेनिन-

"पैरिस कम्यून ने जो महत्वपूर्ण कार्य किया वह यह कि 1848 से 1871 ई. तक के क्रांतिकारी आंदोलनों से परिपूर्ण कालखंड के अंत में अर्थात 1871 में, मार्क्स पूर्व का समाजवाद नष्ट हो गया। उसके स्थान पर 'प्रथम इंटरनेशनल' (1864-1872) और जर्मनी में 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी', ये दो खास श्रमिकों की संघटनाएं अस्तित्व में आई।"

*कम्युनिस्ट घोषणा पत्र लिखा गया उस समय पूरे यूरोप में क्रांति की हवाएं बह रही थीं। स्वतंत्रता, समता और बंधुता का उदघोष करके पूंजीवादी वर्ग ने, श्रमिकों के साथ मिलकर क्रांतियां कीं, सामंतवाद के विरुद्ध। लेकिन क्रांति के बाद सत्ता कब्जे में लेकर श्रमिकों के आंदोलनों को खून में डुबो दिया। (आस्ट्रिया और इटली में भी क्रांति के प्रयत्न हुए थे।

यूटोपियन समाजवाद

*यूटोपिया शब्द की निर्मिति थॉमस मूर द्वारा की गई थी। इसका अर्थ है समृद्धशाली और त्रुटिहीन विचार। यह शब्द यूनानी/लैटिन भाषा से लिया गया है।

*यहां इसे, इस अर्थ में लिया जाता है, बराबरी का काल्पनिक समाज। इसकी कल्पना समय-समय पर अलग-अलग ढंग से की गई है।

*' यूटोपिया ' नाम का ग्रंथ 1516 ई. में थॉमस मूर द्वारा लिखा गया था। इसमें एक काल्पनिक द्वीप पर साम्यवादी समाज का चित्रण मिलता है। मूर (1478-1535) को वैसे तो इंग्लैंड का चान्सलर नियुक्त किया गया था। लेकिन अंत में उनके विचारों के कारण छह जुलाई 1535 ई.को फांसी दी गई।

*और भी कई ग्रंथ मिलते हैं जिनमें काल्पनिक खुशहाल समाजों का वर्णन है।

प्लेटो के'रिपब्लिक' से लेकर तो बेकन के 'न्यू अटलांटीस', जर्मनी की 'ख्रिश्चनपुरी' तक।

*यूटोपिया में शुरू के जमाने के समाजवादी विचार मिलते हैं-

निजी संपत्ति का विरोध।

हरएक को उसकी अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त होना।

संक्षेप में एक सुखी-समाधानी समाज की कल्पना। इन अलग-अलग समाजों में कोई अनुशासन पर आधारित था तो कोई आजादी पर।

जॉ जॉक रूसो(महान फ्रांसीसी चिंतक)(ई.1712-1778)

*उनकी पुस्तक The social contract-1762- में मानवीय समाज का चित्र है।

*सामाजिक समानता का अर्थ है, अवसरों की बराबरी। आधुनिक समाज का सबसे डरावना तथ्य है, उसकी असमानता। समाज के किसी भी व्यक्ति के हाथों में इतनी संपत्ति न आ जाए कि वह किसी अन्य व्यक्ति को खरीद सके या किसी को इतना विपन्न न होने दिया जाए कि उसे अपने आप को बेचने की नौबत आए। यही समानता है।

*हम जितना कम इच्छाएं रखेंगे, उतने ही ज्यादा मुक्त होगे।

*लेकिन आजादी भी, व्यक्ति विकास के लिए आवश्यक है। अधिकतर तत्कालीन चिंतक यही मानते थे। इसे वे प्रकृतिदत्त अधिकार मानते थे। वे जनतांत्रिक ढांचों के तो भोक्ता थे लेकिन साथ ही राज्य सत्ता के भी। अपने आपपर लाद लिये, कानून के अनुसार व्यवहार ही वास्तव आजादी है।

लेकिन उन्होंने-

*समाजवादियों के विपरीत, संपत्ति या उत्पादन के साधनों के सामूहिक स्वामित्व की हिमायत नहीं की। वे संपत्ति को गरीबी और असमानता का स्रोत तो मानते हैं लेकिन उसे परंपरा से प्राप्त हुई संस्था मानते हैं।

*उन्होंने लैंगिक समानता की भी पैरवी नहीं की। स्त्रियों का दर्जा निम्न होना चाहिए।

*उन्होंने तर्क की भी पैरवी नहीं की। उनके अनुसार तर्क मनुष्य को शंकाग्रस्त बना देता है और दया जैसी भावनाओं को विकृत।

*वे भौतिकवादी भी नहीं थे।

काउंट हेनरी सेंट सायमन:फ्रांस(1760-1825ई.)

*जन्म: पैरिस में17-10-1760 को एक कुलीन परिवार में हुआ था।

*वे अमेरिका की आजादी की लडाई में लढे थे और नजरबंद रहे।

उन्होंने फ्रांसीसी क्रांति में भी हिस्सा लिया और फांसी जाते-जाते बचे।

*उन्होंने काफी धन कमाया। वैज्ञानिक, कलाकारों को बढावा दिया लेकिन उनके अंतिम दिन विपन्न अवस्था में बीते। उनका मानसिक संतुलन बिगडा था। 1825 में उनकी मृत्यु हो गई।

*वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने उन परिस्थितियों का वर्णन किया जिन्हें 'औद्योगिक क्रांति' कहते हैं।

*वे उद्योगपति और श्रमिकों के हित एकदूसरे के विरूद्ध नहीं मानते थे। वे उद्योगपतियों को गरीबों के ट्रस्टी मानते थे। वे निजी संपत्ति का नियंत्रण चाहते थे।

*"हर एक से उसकी क्षमता के अनुसार और हर एक को उसकी आवश्यकता के अनुसार" इस विचार को सायमन ने ही ईजाद किया था जिसे मार्क्स ने कम्युनिस्ट समाज के वर्णन का हिस्सा बनाया।

*उन्होंने 'काम के अधिकार' और 'सार्वजनिक कर्तव्य' का भी समर्थन किया।

*सायमन की मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने 'सेंट सायमनवाद' को समाजवादी सिद्धांत के रूप में विकसित किया। श्रम और क्षमता के अनुसार वस्तुओं के वितरण और उत्पादन के सामाजिक संगठन, नियोजन की मांग की। आर्मांड बजार्ड बर्थलेमी और एंफैंटिन उनके अनुयायी थे।1830 की क्रांति के बाद इसके समर्थकों की संख्या चालीस हजार तक पहुंच गई। फिर भी 1833में इसे गैरकानूनी घोषित किया। लेकिन यह मुख्यत: बुद्धिजीवियों का आंदोलन था।सायमनवादी सबसे प्रामाणिक समाजवादी माने जाते थे।

फांसो नोएल ग्राक्स बेबूफ (1760-1797) और फिलिपो मिसैल: फ्रांस

*उन्होंने वर्तमान व्यवस्था को षड्यंत्रकारी तरीके से उलट देने की बात रखी।

*बेबूफ के प्रोग्राम में संपत्ति का क्रमशः राष्ट्रीयीकरण शामिल था। जनता द्वारा चुने हुए प्रबंधकों की देखरेख में उत्पादन होगा।

*किसी को विरासत में संपत्ति नहीं मिलनी चाहिए। व्यक्ति के मरने के बाद संपत्ति सरकार की होगी।

*प्रथम फ्रेंच क्रांति की मशाल आगे ले जाने वाला व्यक्ति बेबूफ ही था।

*उसने 'जनता ट्रिब्यून' नाम से एक पत्र निकाला जो शायद पहिला साम्यवादी पत्र था।

*उसने एक गुप्त दल स्थापित किया था। स.1796 तक इसकी सदस्य संख्या17000 हो गई। लेकिन किसी भेदिए के कारण बेबूफ को पकड लिया गया और सैतीस साल की आयु में फांसी दी गई। उसके साथी अपने गुप्त संगठन को 'समानों की गुप्त समिति' कहते थे।

राबर्ट ओवेन:इंग्लैंड (1771-1864)

*जन्म: न्यूटन मॉन्टगोमेरी शायर, केंद्रीय वेल्स में हुआ। वे एक लुहार के पुत्र थे। औपचारिक शिक्षा बहुत कम हुई। लेकिन अपने प्रयासों के आधार पर वह अंग्रेजी वक्ता, लेखक और आत्मनिर्भर उद्योगपति बने। मिल व्यवस्थापक- भागीदार इस रूप में1800-1829ई. तक स्काटलंड के न्यू लेगार्ड में कपडे की मिल चलाई। उपरोक्त मिल के 2500 श्रमिकों की बस्ती को आदर्श बस्ती बनाने के लिए अनेक सुधार किए। उनके प्रयासों को सफलता भी मिली। मिल को भी लाभ हुआ।

उन्होंने किए हुए सुधार-

श्रमिकों के स्वास्थ्य के नियमों के लिए कडाई भी की। शराब पर पाबंदी लगाने का प्रयास किया।

उनके लिए अच्छे घर बनाए।

मजदूरों द्वारा सामान खरीदने के लिए भंडार खोलें जहां चीजें 20% सस्ती मिलतीं

कपडा मिलों में काम की स्थितियां बेहतर की। काम के घंटे 14 के स्थान पर 10.5 किए।

*एक मॉडल स्कूल तथा कई शिशु केंद्र खोले।

*1806 में जब अमेरिका ने कपास भेजने में रुकावट डाली तो मिल बंद करनी पडी। फिर भी ओवेन मजदूरों को पूरी मजदूरी देते रहे।

श्रमिकों के लिए ये सब करने वाले इतिहास में वे प्रथम व्यक्ति थे।

इसी तरह उन्होंने मजदूरों की स्थिति सुधारने के लिए कानून बनाने के लिए शक्ति और धन खर्च किया। निम्न बातों पर जोर दिया-

*कारखानों में काम के घंटे बारा कर दिए जाए जिसमें डेढ घंटा खाने के लिए हो।

*दस वर्ष से छोटे बालकों से काम न लिया जाए।

*बारह वर्षों से कम उम्र के बच्चों के काम के घंटे छह से अधिक न हो।

*श्रमिकों के बच्चों के लिए स्कूल खोले जाए।

इनमें से कई मांगें सर राबर्ट पोल ने एक बिल में रखीं जो अंतत: 1819 में पास कर दिया गया।

*उन्होंने निम्न और बातों पर जोर दिया-

1) शिक्षा सार्वजनिक, अनिवार्य और हर व्यक्ति के लिए लाभदायक हो।

2) बेकारी का डर न रहे।

3) कोई व्यक्ति गरीबी की रेखा के नीचे न हो।

*ओवेन ने इंग्लैंड की सहकारी और ट्रेड यूनियन आंदोलनों में तीस वर्षों तक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

(वे दो बार की पार्लमेंट के लिए खडे रहे लेकिन दोनों बार हार गए।)

*जिस परिषद में इंग्लैंड के सभी संघों ने एक ही बडा संघ बनाना मान्य किया उस परिषद के ओवेन अध्यक्ष थे।

*समाज की संपूर्ण साम्यवादी रचना करने के पहले, हंगामी व्यवस्था के तौर पर ओवेन ने चिल्लर व्यापार और चिल्लर उत्पादन करने वाली, सहकारी संस्थाएं गठित की।

*सारे धर्म धोखा है। अर्थात वे भौतिकवादी थे।

*प्रतियोगिता के स्थान पर सहयोग के आधार पर वे वर्गहीन और क्षमतावान समाज चाहते थे।

*1824 ई.में ओवेन ने तीस हजार पौंड में युक्त राष्ट्र (हार्मनी इंडियाना) में जमीन खरीदी और उसपर 'न्यू हार्मनी' नाम से वहां एक आदर्श साम्यवादी उपनिवेश बसाया। लेकिन तीन साल के प्रयत्नों के बाद भी वह असफल रहा। ऐसे ही एक-दो और भी प्रयोग हुए लेकिन सभी असफल रहे।

चार्ल्स फूरिए(1772-1837):फ्रांस

सेंट सायमन के सूत्र को उन्होंने इस तरह बदल डाला-"प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार, प्रत्येक को उसकी श्रम - पूंजी और क्षमता के अनुसार।"

उन्हें सबसे शुरुआती सामाजिक पर्यावरणवादियों में से एक माना जाता है।

ओवेन के साथ-साथ फूरिए भी नारी-मुक्ति तथा लिंग समानता के प्रारंभिक पहल-कर्ता थे।

उनसे प्रेरणा पाकर 'समाज' स्थापना के कई प्रयत्न हुए।

क्रोपाटकिन ने फूरिए को 'अनार्किझम' का आरंभकर्ता माना।

कैबे तथा सेंट सायमन के साथ फ्रांसो मारी चार्ल्स फूरिए को शुरूआती फ्रांसीसी समाजवादी आंदोलन प्रारंभ करने का श्रेय जाता है।

फूरिए को उन्नीसवीं सदी के फ्रांस के समाजवादियों में सबसे अधिक मुक्तीवादी माना जाता है।

#1808 में उनका प्रथम ग्रंथ प्रकाशित हुआ।

फूरिए का जोर विज्ञान और तर्क पर था।

उनका एक कथन-

"विकास में आगे बढे समाज में, विपुलता में से ही विपन्नता जन्म लेती है।"

लेकिन इन सारे विचारों या कल्पनाओं के पीछे कोई वैज्ञानिक आधार नहीं था। अत: इनके लिए 'मनोरथी समाजवाद ' यह नाम (Utopian)रूढ हो गया। फिर भी जर्मन सैद्धांतिक समाजवाद इस बात को कभी नहीं भूलेगा कि यह सेंट सायमन, फूरिए और ओवेन के कंधों पर खडा है। श्रमिक शोषण का शिकार है, यह मानने पर भी उन्होंने वर्ग संघर्ष की पैरवी नहीं की।

वास्तव में उस समय पूंजीवादी उत्पादन पध्दति और श्रमिक वर्ग का होना दोनों बातें अपनी प्राथमिक अवस्था में ही थीं। अतः समाजवादी विचार भी अपनी भ्रूण अवस्था में हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

आन्तरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस

एक मई१८६६ को अमेरिका के शिकागो में हडताली मजदूरों का विशाल प्रदर्शन हो रहा था| पुलिस के दमन के कारण श्रमिकों के खून से धरती लाल हो गई| तभी से एक मई ,आंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस के रूप में मनाया जाता है| इसका उद्देश्य है, श्रम की गरिमा को स्थापित करना,उसको पूंजी के चंगुल से मुक्त करना और शोषण के विरुद्ध संघर्ष करना|

आंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

रूस की एक फॅक्टरी में पुरुष और महिलाओं ने समान काम करने पर भी महिलाओं को कम वेतन दिया जाता था| इस भेदभाव के विरोध में कॉमरेड क्लारा जेटकिन ने उस फॅक्टरी की महिला श्रमिकों को आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया| वह आठ मार्च का दिन था| उस समय इसे महिलाओं ने "कामगार दिवस"के रूप में मनाया| लेकिन १९१३ से यह आन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में सारे विश्व में मनाया जाने लगा|